सप्तम अध्याय

1. 'भट्टिकाव्यम्' के पदों में कारक–विभक्ति निर्णय –

वसुनि .... निरास्थत्।।3।।

गोत्रभिदा सह आसनम् – 'सह' शब्द के प्रयोग में 'सहयुक्तेऽप्रधानें'[1] सूत्र से 'गोत्रभिदा' शब्द में तृतीया विभक्ति।

आसनम् अध्यवात्सीत् – 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'वस्' से युक्त अध्यावात्सीत् शब्द के कारण 'उपान्वध्याङ्वसः'[2] सूत्र से आसनम् की कर्म संज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया'[3] सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

त्र्यम्बकात् अन्यं न उपास्थितः – 'त्र्यम्बकात्' शब्द में 'अन्यारादितरर्तेदिक शब्दाऽञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते' [4]सूत्र से अन्य शब्द योग से पञ्चमी विभक्ति।

पुण्यो .... वह्रिरभिप्रणीतः।। 4।।

नाकसदां सन्तर्पणः– 'ल्युट्' प्रत्यान्त शब्द सन्तर्पणः के कारण 'कर्तृकर्मणोः कृतिः[5] सूत्र से कर्म नाकसदाम् में षष्ठी बहुवचन विभक्ति।

स पुण्यकीर्तिः .... ब्रह्मभिरिद्धबोधेः ।। 5।।

अध्यासिताम् अयोध्याम् अध्यास्त – 'अधि' उपसर्गपूर्वक् 'आस्' धातु के प्रयोग के कारण 'अधिशीङ्स्थासां कर्म'[6] सूत्र से अध्यासिताम् व अयोध्याम् की कर्म संज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

अन्तर्निविष्टोज्जवलरत्नभासो .... गृहेभ्यः।। 8।।

गृहेभ्यः गवाक्षजालैः अभिनिष्पतन्त्यः हिमाद्रिटंकात् गगाम्बुपातप्रतिमाभिरिव भायते– 'पत्' धातु के प्रयोग में 'गृहेभ्यः' व 'हिमाद्रिटंकात्' शब्द की ध्रुवमपायेऽपादानम्'[7] से 'अपादान संज्ञा' तथा 'अपादाने पञ्चमी'[8] से पञ्चमी विभक्ति।

पुत्रीयता .... पुरमृष्यशृङः।। 10।।

मुनिः पराङ्नाभिः स्वां पुरम् आनायि – 'आनायि' ण्यन्त नी धातु से प्रधानकर्म मुनि में प्रथमा विभक्ति तथा गौणकर्म अनुक्त होने से पुरम् में द्वितीया विभक्ति है, यहां प्रयोज्यकर्ता में वराङ्नाभिः में 'गति बुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्ता स णौ'[9] सूत्र से द्वितीया प्राप्त किन्तु 'नीवहोर्न' से निषेध।

ऐहिष्टं .... सुताऽनुबन्धम्।। 11।।

मुनीन्द्रं पुत्रफलं क्रतुं कारयितुम् ऐहिष्ट – कारयितुम् के योग में 'हृकोरन्यतरस्याम्[10] सूत्र से मुनीन्द्रम् की कर्म संज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति।

रक्षांसि .... नृपतेरमार्गीत् ।। 12।।

वेदीं परितः। प्रधानम् अभितः अंगानि – 'अभितः परितः समयानिकषा हाप्रतियोगेऽपि' वार्तिक से परितः के योग में वेदीम् में द्वितीय विभक्ति तथा अभितः के योग में प्रधानम् में द्वितीया विभक्ति।

कौसल्यया .... सह लक्ष्मणेन ।। 14।।

लक्ष्मणेन सह उदारचेष्टं – सह पद केयोग में ''सहयुक्तेऽप्रधाने''[11] सूत्र से लक्ष्मणेन में तृतीया विभक्ति।

आर्चीद् .... वरिष्ठः ।। 15।।

यमिनाम् वरिष्ठः यतिः – 'वरिष्ठः' निर्धारण वाचक शब्द का प्रयोग होने से 'यतश्च निर्धारणम्'[12] सूत्र से 'समुदाय' वाचक शब्द यमिनाम् में षष्ठी विभक्ति।

वेदः .... अध्यवात्सु ।। 16।।

मानसानि समम् अध्यावात्सुः – अधि उपसर्ग पूर्वक वस् धातु के प्रयोग में आधार मानसानि की ''उपान्वध्याङ्वसः''[13] सूत्र से कर्म संज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया'[14] से द्वितीया विभक्ति।

स शुश्रुावांन् .... वचतापसकुञ्जरेण ।। 20।।

सुतविप्रयोगम् असहिष्णुः – सुतविप्रयोगम् में 'कृतकर्मणो कृतिः'[15] सूत्र से षष्ठी प्राप्त थी किन्तु 'न 'लोकाऽव्ययनिष्ठाखलर्थतृणाम्'[16] से निषेध होकर 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

द्वितीय सर्ग

तरङ्गसङ्गाच्चपलैः .... षट्पदानि ।। 2।।

तरंगसङ्गात् चपलैः पलाशैः साऽतिशयां – 'कारण' या 'हेतु' प्रकट करने वाले गुणवाची अस्त्रीलिंग शब्द तरंगसंङ्गत् में 'विभाषागुणोऽत्रियाम्'[17] सूत्र से 'पञ्चमी विभक्ति' तथा कारण पलाशैः एवं उसके विशेषण चपलैः में ''हेतौ''[18] सूत्र से 'तृतीया बहुवचन' विभक्ति।

बिम्बागतैस्तीरवनैः .... स्थलपद्महासैः।। 3।।

समृद्धि पयोभिः बिम्बागतैः तीरवनैः अपहृतां – 'हृ' धातु के प्रयोग में कारण वाची शब्द पयोभिः बिम्बगतैः तीरवनैः में 'हेतौ'[19] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

गिरेनितम्बे .... लक्ष्मीम् ।। 8।।

विभिन्नं तोयाऽवशेषेण हिमाभं – हेतु या कारण में अस्त्रीलिंग शब्द 'तोयावशेषेण' शब्द में 'हेतौ'[20] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

अदृक्षताऽम्भांसि .... व्यतिषङ्गवांश्च ।। 10।।

तेन नवोत्पलानि अभ्यायांसि अदृक्षत् – कर्मत्व की विवक्षा होने पर अदृक्षत् के कारण नीलोत्पलानि'' में 'प्रथमा विभक्ति' उक्त होने से हुई।

लताऽनुपातं .... आस्त ।। 11।।

चारूशिलोपवेशम् आस्त च – इस वाक्य में अकर्मक 'धातु' आस का प्रयोग होने पर भी 'उपवेशम्' की ''अकर्मकधातुभिर्योगेदेशःकालोभावोगन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम्'' इस वार्तिक से 'कर्म संज्ञा' तथा 'कर्मणि द्वितीया'[21] से द्वितीया विभक्ति।

तिग्मांशुरश्मि .... संभृतानि ।। 12।।

प्रभाते अदूरात् प्राञ्चि – ''दूराऽन्तिकाऽर्थेभ्यो द्वितीया च''[22] सूत्र से दूरवाची 'अदूरात्' शब्द में पञ्चमी विभक्ति तथा इसके योग में प्रभाते शब्द में ''सप्तम्यधिकरणे च''[23] सूत्र से सप्तमी विभक्ति।

सिताऽरविन्दप्रचयेषु .... श्रोत्रसुखैर्निनादैः ।। 18।।

श्रोत्तसुखैः निनादैः प्रतीयिरे – प्रतीयिरे क्रिया की सिद्धि में सहायक निनादैः तथा उसका विशेषण श्रोत्रसुखैः की ''साधकतमं करणम्''[24] सूत्र से 'करण कारक संज्ञा' तथा ''कर्तृकरणयोस्तृतीया''[25] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

तं यायजूकाः .... जगदर्चनीयम् ।। 20।।

भिक्षुमुख्यैः सह जगदर्चनीयम् – 'सह' शब्द के योग में अप्रधान ''भिक्षुमुख्यैः'' शब्द में ''सहयुक्तेऽप्रधाने''[26] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

आयोधने .... जागरूकः ।। 22।।

अभ्यर्णमहाहवाय तस्मै क्षणदाचराणां वधाय आयोधने स्थायुकम् अमोघम् अस्रजातम् ददौ –

'दा' धातु के कर्म 'अस्रजातम्' का उपभोक्ता 'तस्मै' तथा उसके विशेषण की ''कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्''[27] से सम्प्रदान संज्ञा तथा ''चतुर्थी सम्प्रदाने''[28] से चतुर्थी विभक्ति।

तं विप्रदर्शं .... रामः ।। 23।।

यान्तं वने तं डुढौके – 'ढौक गत्यर्था' धातु के आधार वन की 'आधारोऽधिकरणम्'[29] सूत्र से अधिकरण संज्ञा तथा ''सप्तम्यधिकरणे च''[30] सूत्र से सम्तमी विभक्ति।

दैत्याऽभिभूतस्य .... अभाषिषाताम् ।। 27।।

दैत्याऽभिभूतस्य मग्नस्य भुवनस्य भारं दोर्भिः अवोढंम् – कृत् प्रत्ययान्त 'भारं' के कारण ''कर्तृकर्मणोः कृति''[31] सूत्र से कर्म भवनस्य और उसके विशेषणों में षष्ठी विभक्ति हुई।

प्रतुष्टुवुः .... प्रसर्पत् ।। 29।।

यक्षियैः द्रव्यगणै यथावत् कर्मं प्रतुष्टुवुः – यहां 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'स्तु' के क्रिया की सिद्धि में सहायक यज्ञियैः 'द्रव्यगणै' की 'साधकतमं करणम्'[32] से करण संज्ञा तथा ''कतृकरणयोस्तृतीया'[33] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

अपिङ्गरूक्षोर्ध्वशिरस्बालैः...चाऽऽनशेऽब्दैः।। ३०।।

शिरस्यबालैः शिरालजंघैः पृथुपिङ्गलाक्षैः क्षपाटैः प्रावृषेण्यैः अब्दैः इव खम् आनशे च।–इन लक्षण वाचक शब्दों में ''इत्थंभूतलक्षणें''[34] सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई।

आत्मम्भरिस्त्वं .... न कस्मात्।। ३३।।

तेषां दयसे न कस्मात्–'दय' धातु के योग में 'अधीगर्थदयेशां कर्मणि''[35] सूत्र से तेषां में षष्ठी विभक्त।

अद्मो .... वेदवृत्ते।। ३४।।

देवयजीन् निहन्मः–'निहन्मः' पद के योग में 'जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्'[36] सूत्र से षष्ठी विभक्ति प्राप्त, किन्तु संघातविगृहीत विपर्यस्तग्रहणात्' षष्ठी प्राप्त नहीं होकर 'कर्म संज्ञा' से अविवक्षणा होने से द्वितीया विभक्ति।

धमोऽस्ति .... धूर्तकाम्केषुः ।। ३५ ।।

ब्रह्मद्विषः ते प्रणिहन्मि–'प्रणिहन्मि' के योग से ''जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिसांयाम्''[37] सूत्र से 'ते' में षष्ठी विभक्ति।

इत्थंप्रवादं .... प्रधनान्निरास्थत् ।। ३६ ।।

तृणाय मत्वा वाणेन प्रधनात् निरास्थत्–'मन्' के प्रयोग मत्वा के कारण 'मन्यकर्मण्यानादरे विभाषाऽप्राणिषु''[38] सूत्र से तृणाय'' में चतुर्थी विभक्ति।

जग्मुः .... कुमारः ।। ३७ ।।

पुष्पचयं वर्षुका बभूव– वर्षुका (वृषु धातु से उकञ') शब्द का प्रयोग होने से 'कर्तृकरणोः कृति'[39] सूत्र से षष्ठी प्राप्त किन्तु ''न लोकाऽव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम्''[40] सूत्र से षष्ठी का निषेध होकर 'कर्मणि द्वितीया'[41] सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

बलिर्बबन्धे .... गुरूर्न तस्य ।। ३९ ।।

येन बलिः बबन्धे, जलधिः ममन्ये, अमृत जहे दैत्यकुलं विजिग्ये–उक्त सभी वाक्यों में कर्मवाच्य का प्रयोग होने से उक्त कर्मों में बलिः जलधिः इत्यादि में 'प्रथमा विभक्ति' का प्रयोग हुआ।

इति ब्रुवाणो .... निजिघृक्षयिष्यन् ।। ४० ।।

तं रामं मैथिलयज्ञभूमिम् आञ्जिहत्–'आञ्जिहत्' धातु के प्रयोग के कारण राम की ''गतिबुद्धिप्रत्यवसा नार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्ता स णौ''[42] सूत्र से अण्यन्त अवस्था के कर्ता राम की 'कर्म संज्ञा' तथा ''कर्माणि द्वितीया''[43] से द्वितीया विभक्ति।

इतः स्म .... नृसिंहौ ।। ४१ ।।

सोमरसं पिपासू मित्रावरूणौ इतः स्म किम्–इस वाक्य में 'पा' धातु से सन् प्रत्यय होकर बने पिपासू शब्द से 'सनांशसभिक्ष उः' सूत्र से 'उ' प्रत्यय है अतःकृत् प्रत्यय के योग में ''कर्तृकर्मणोःकृतिः''[44] सूत्र से षष्ठी प्राप्त किन्तु 'न लोकाव्ययनिष्ठाखलार्थतृणाम्'[45] सूत्र से निषेध तथा कर्म होने से ''कर्माणि द्वितीया'' सूत्र से सोमरस में द्वितीया विभक्ति।

अजिग्रहत्तं .... रघुनन्दनस्तत् ।। ४२ ।।

जिज्ञासमानः तं तत् धनुः अजिग्रहत्–

यहां 'बुद्धि' अर्थक 'ग्रह्' धातु का प्रयोग करने से 'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थ शब्दकर्माकर्मनाम् अणि कर्ता स णौ''[46] सूत्र से अण्यन्त अवस्था के कर्ता की 'कर्म संज्ञा' तथा 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति।

ततो नदीष्णान् .... मैथिलमृर्त्यमुख्यः ।। ४३ ।।

पथिकान् गिरिज्ञा भूमिपतेः आह्वयकान्–कृत्प्रत्यय के प्रयोग के कारण ''कृतकर्मणोः कृति''[47] सूत्र से 'भूमिपति' में षष्ठी विभक्ति।

यौध हरैः तुरंगैः अयोध्यां व्यसर्जयत् – 'वि' उपसर्गपूर्वक सृज् धातु व्यसर्जयत् क्रिया कि सिद्धि में सहायक 'तुरंगै' एवं उसके विशेषण 'योधहरैः' की 'साधकतमं करणम्'[48] सूत्र से करण संज्ञा तथा 'कर्तृकरणयोस्तृतीया'[49] सूत्र से तृतीया विभक्ति। तथा गम्यमान उद्देश्यक्रिया के प्रति अयोध्या की कर्म संज्ञा तथा ''कर्मणि द्वितीया''[50] से द्वितीया विभक्ति।

वृन्दिष्ठ .... वरिष्ठम्।। ४५।।

सः वसुधाऽधिपानां वृन्दिष्ठं श्रेष्ठं गुरूवत्–वृन्दिष्ठम्, श्रेष्ठम् शब्दों में इष्ठन् प्रत्ययों का प्रयोग होने के कारण ''यतश्च निर्धारणम्''[51] सूत्र से वसुधाऽधिपानाम् में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग।

त्रिवर्गपारीणमसौ .... बभाषे।। ४६।।

असौ इन्द्रः त्रिवर्गपारीणं भवन्तम् एकम् आसनम् अध्यासयन्– ''गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकानाम् अणि कर्ता स णौ''[52] सूत्र से भवन्तम् की कर्म संज्ञा तथा ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

- 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'आस्' धातु के प्रयोग अध्यासयन् के कारण ''अधीशीङ्स्थाऽऽसां कर्मः''[53] सूत्र से आधार आसनम् की 'कर्म संज्ञा' तथा 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति।

'तम् इदं वाक्यं बभाषे''–'ब्रू' धातु के समानार्थक द्वि कर्मक धातु भाष् के प्रयोग से 'अकथितं च'[54] सूत्र से तम् एवं वाक्यं की 'कर्म संज्ञा' एवं 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति।

हिरणमयी .... मैथिली।। ४७।।

मैथिली तस्य सुताय ददे–'दा' धातु के प्रयोग में 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्''[55] सूत्रं से सुत की सम्प्रदान संज्ञा तथा चतुर्थी सम्प्रदाने'' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति।

अजीगणत् .... तस्य।। ५३।।

दशरथं वाक्यं न अजीगणत् – 'ब्रू' धातु के समानार्थ ''गण संख्याने'' द्विकर्म धातु के प्रयोग में 'अकथितं च'[56] सूत्र से दशरथ की 'कर्म संज्ञा' तथा 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति।

तृतीय सर्ग

वधेन संख्ये .... नाऽऽसीत्।।1।।

संख्येपिशिताऽशनानाम् वधेन–'हन्' धातु से 'अप् प्रत्यय' से बने शब्द 'वध' के कारण ''कर्तृकर्मणोः कृति''[57] सूत्र से कर्म पिशिताऽशनानाम्'' में षष्ठी विभक्ति।

क्षत्राऽन्तकस्य अभिभवेन चैव यशसा–'अभि' उपसर्गपूर्वक 'भू' धातु से 'अप् प्रत्यय' के प्रयोग अभिभव के कारण 'कर्तृकर्मणोः कृति'[58] सूत्र से क्षत्राऽन्तकस्य'' में षष्ठी विभक्ति।

प्रास्थापयत् .... तीर्थजलाऽर्थमाशु।। ४।।

पुरूषान् तीर्थजलार्थं समन्तात् प्रास्थापयत् –यहां 'प्रास्थापयत्' गति अर्थ धातु के प्रयोग से अण्यन्त अवस्था के कर्ता 'पुरूषान्'' की ''गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणाम् अणि कर्ता स णौ''[59] सूत्र से 'कर्म संज्ञा' तथा ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

मातामहा .... वनप्रयाणम्।। ६।।

भरतं मोहात् अपृष्टवा –'मोहात्' शब्द में ''विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्''[60] सूत्र से अस्त्रीलिंग हेतु वाचक होने से पञ्चमी विभक्ति।

रामस्य वनप्रयाणं ववार–रामस्य शब्द 'कर्तृकर्मणोः कृति'[61] सूत्र से कर्ता अर्थ में 'षष्ठी विभक्ति' का प्रयोग।

ततः प्रविव्राजयिषुः .... शोचन्।। ९।।

अस्य सुमन्त्रनेत्रेण रथेन वनाय अभिगमं शोचन् आदिक्षत्–'अभि' उपसर्गपूर्वक 'गम्' धातु का प्रयोग होने से ''गत्यार्थकर्मणि द्वितीया चतुर्थयौ चैष्टायामध्वनि''[62] सिद्धि में सहायक ''सुमन्त्रनेत्रेण रथेन'' की ''साधकतमं करणम्''[63] सूत्र से करण संज्ञा तथा ''कर्तृकरणयोस्तृतीया''[64] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

केचित् .... जगाद।। १०।।

अपरः केकयीं धिक् इति जगाद–यहां 'धिक्' के योग में 'उभसर्वतसोः कार्य धिगुपर्यादिषुत्रिषुः द्वितीयाम्रेंडितान्तेषु ततोऽन्यत्राऽपि दृश्यते' कारिका से केकयी में द्वितीया विभक्ति।

गतो वनं .... मनांसि।। ११।।

शोकेन अतिमात्रं देहे–'देह' धातु का प्रयोग होने पर अस्त्रीलिङ्ग गुणवाचक शब्द 'हेतु' का बोध कराने से 'शोक' शब्द में 'विभाषागुणेऽस्त्रियाम्'[६५] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

प्रस्थास्यमाना .... कृतार्थान्।। १२।।

शोशुच्यमानान् तान् इदम् ऊचतुः–ऊचतु 'ब्रू' द्विकर्म धातु रूप होने से 'इदम्' मुख्यकर्म तथा 'शोशुच्यमानान्' गौण कर्म की 'अकथितं च''[66] सूत्र से 'कर्म संज्ञा' तथा 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

असृष्ट यो .... वनस्य मोक्षः।। १३।।

तस्य महोपकारस्य तुच्छेन वनस्य यानेन मोक्षः अस्ति किम्?–गत्यर्थक 'या' धातु का प्रयोग होने ''गत्यार्थकर्मणि द्वितीया चतुर्थ्यौ चेष्टायामध्वनि'' सूत्र से चतुर्थी प्राप्त किन्तु, कृत लक्षणा से ''शेषे षष्ठी''[67] सूत्र से वनस्य में षष्ठी विभक्ति। तथा जन्यजनक भाव सम्बन्ध होने से 'तस्य' में 'शेषे षष्ठी' से षष्ठी विभक्ति।

विद्युत्प्रणाशं .... गुरूणाम्।। १४।।

यः गुरूणां शासने न अवास्थितम्।–'शासने' शब्द में 'ल्युट प्रत्यय' का प्रयोग होने से ''कर्तृमर्कणोः कृति''[68] सूत्र से गुरूणाम् में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ।

पौरा .... सूतम्।। १५।।

तातस्य शोकाऽनुपदाः भवेत।–'घञ्' प्रत्ययान्त ' शोक' शब्द का प्रयोग होने से ''कर्तृकर्मणोः कृति''[69] सूत्र से तात शब्द में षष्ठी विभक्ति।

ज्ञात्वेङ्गितैर्गत्वरतां .... रामः।। १६।।

एकां रजनीं तान् वनेवासकृतात् भयात् रक्षन् शयित्वा प्रात् छलेन अपजगाम।–
कालवाची 'रजनी' में ''कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे''[70] सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

● रक्ष् धातु के प्रयोग से 'भीत्रार्थानां भयहेतुः''[71] सूत्र से 'भयात्' की अपादान संज्ञा तथा'' अपादाने पञ्चमी''[72] से पञ्चमी विभक्ति। **'अपजगाम'** धातु के प्रयोग में गुणवाची अस्त्रीलिंग कारण छल में ''विभाषागुणेऽस्त्रियाम्''[73] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

सूतोऽपि .... पुरमाविवेश।। १८।।

ससीतयोः अधीयन् कदुष्णं श्वसन् पुरम् आविवेश–'अधि' उपसर्गपूर्वक 'इक् स्मरणे' धातु का प्रयोग होने से'' अधीगर्थदयेशां कर्मणि''[74] सूत्र से कर्म ससीता में षष्ठी विभक्ति।

विलोक्य .... वस्त्रे।। २०।।

नृपतिः रामेण विना सुमन्त्रं विलोक्य–'बिना' के योग से, ''पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्''[75] सूत्र से राम में तृतीया विभक्ति।

आसिष्ट .... द्युनिवासभूयम्।। २१।।

क्षितिपाल भाग्भ्यः कृताऽकृतेभ्यः व्यंरसीत्।–'व्यरंसीत्' धातु के प्रयोग में ''जुगुप्साविरामप्रमादाऽर्थानामुपसंख्यानम्'' वर्तिका से 'क्षितिपालभाग्भ्यः' व 'कृताऽकृतेभ्यः' की अपादान संज्ञा तथा अपादाने पञ्चमी[76] सूत्र से पञ्चमी विभक्ति।

ताः सान्त्वयन्ती .... यूनः।। २३।।

यूनः दूतान् मन्त्रिमतेन प्रास्थापयः च–णिजन्त 'प्रास्थापयः' धातु का प्रयोग होने 'गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्मा कर्मकाणाम् अणि कर्ता स णौ''[77] सूत्र से अणन्यत अवस्था के कर्ता दूत की 'कर्म संज्ञा' तथा ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

सुप्तो .... राज्ञः।। २४।।

राज्ञः प्रमादं पश्यन् सखिभ्यः आख्यत्–'क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्' सूत्र से सखि शब्द की सम्प्रदान संज्ञा तथा ''चतुर्थी सम्प्रदाने''[78] से चतुर्थी विभक्ति।

अशिश्रवन् .... गुरूणाम्।। २५।।

यदा दूताः एत्य प्रयियासयन्तः तम् आत्ययिकम् अर्थं न अशिश्रवन्–'श्रृणोतिः' शब्द कर्मक धातु के प्रयोग में गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणाम् अणि कर्ता से णौ''[79] सूत्र से तम् की 'कर्म संज्ञा' तथा 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति।

तदा गुरूणाम् उत्कण्ठमानः–'उत्कण्ठमानः' का प्रयोग होने से 'अधीगर्थदयेशां कर्मणि''[80] सूत्र से कर्म 'गुरूणाम्' में षष्ठी विभक्ति।

बन्धूनशङ्किष्ट .... अरासिषुश्च।। २६।।

समाकुलात्वात् स्नेहवशात् च बन्धुन् अपायम्–गुणवाची, अस्त्रीलिंग कारण समाकुल एवं स्नेह में 'विभाषागुणेऽस्त्रियाम्''[81] सूत्र से पञ्चमी विभक्ति।

शीघ्रायमाणैः .... रथाश्वमिश्रैः।। ३७।।

सृप्तैः शोकात् अभूषैः–अस्त्रीलिङ्ग गुणवाची के कारण शोक में **'**विभाषागुणेऽस्त्रियाम्'[८२] सूत्र से पञ्चमी विभक्ति।

नागेन्द्ररथाऽश्वमिश्रैः जनैः भूः चकासाञ्चकार–'जनै' एवं उसके विशेषण 'नागेन्द्ररथाऽश्वमिश्रैः' मे 'हेतौ'[83] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

उच्चिक्यिरे .... विशश्रमुश्च ।। 38 ।।

ते वनानि पुष्पफलम् उच्चिक्यिरे – 'चि' धातु का प्रयोग होने से 'अकथितं च'[84] सूत्र से गौण कर्म 'वन' की 'कर्म संज्ञा' तथा ''कर्मणि द्वितीया'' से द्वितीया विभक्ति।

वाचंयमान् ....म... सशिष्यम् ।। 41 ।

युयुक्षमाणान् मुमुक्षून् अध्यापयन्तम – अण्यन्त अवस्था के कर्ता 'मुमुक्षु' की ''गतिबुद्धिप्रत्यवसनार्थशब्द कर्माकर्मकाणाम् अणि कर्ता स णौ''[85] सूत्र से 'कर्म संज्ञा' तथा ''कर्मणि द्वितीया'' से द्वितीया विभक्ति।

आतिथ्यमेभ्यः .... द्राघिमवन्त्युदूहुः ।। 42 ।।

एभ्यः आतिथ्यं परिनिर्विवप्सोः – 'एभ्यः' की ''कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्''[86] सूत्र से 'सम्प्रदान संज्ञा' तथा ''चतुर्थी सम्प्रदाने'' से चतुर्थी विभक्ति।

आज्ञां .... तस्मिन् ।। 43 ।।

विनयात् उपास्थुः – यहाँ अस्त्रीलिंग गुणवाची कारण में 'विभाषागुणेऽस्त्रियाम्'[87] सूत्र से पंचमी विभक्ति।

ते भुक्तवन्तः .... समीयुः ।। 45 ।।

सुसुखं रजनीम् उषित्वा – यहाँ 'कालवाची' रजनी की क्रिया के साथ निरन्तर संयोग होने से ''कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे''[88] सूत्र से रजनी में द्वितीया विभक्ति।

वैखानसेभ्यः .... चित्रकूटम् ।। 46 ।।

ततः वैखानसेभ्यः श्रुतरामवार्ताः – नियम पूर्व वार्ता (विद्या) स्वीकार करने में ''आख्यातोपयोगे''[89] सूत्र से वैखानस की आपादान संज्ञा तथा ''अपादाने पंचमी''[90] से पंचमी विभक्ति।

चित्रकुटम् अद्रिं प्रति आनंहिरे – 'प्रति' की ''लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सायाम् प्रतिपर्यनवः''[91] सूत्र से कर्म प्रवचनीय संज्ञा तथा ''कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया''[92] सूत्र से अद्रि में द्वितीया विभक्ति।

चिरं .... अन्तिकेऽपाम् ।। 50 ।।

सरितं समेत्य मध्येजलात् अपाम् अन्तिके – यहाँ मध्येजलात् में ''पारेमध्ये षष्ठ्या'' से अव्ययी भाव समास ''नाव्ययीभावादतोऽत्एवपंचम्या'[93]' सूत्र से पंचमी का निषेध किन्तु ''ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च'' सूत्र से पंचमी विभक्ति 'ल्यप्' के अभाव के कारण।

अपाम् अन्ति के – 'दूरान्तिकार्थैः षष्ठयन्ततरस्याम्''[94] सूत्र से 'अन्तिक' शब्द के योग अपाम् शब्द में षष्ठी विभक्ति तथा ''दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च'' सूत्र से अन्तिक शब्द में सप्तमी विभक्ति।

कृती श्रुती .... पुत्रकाम्या ।। 52 ।।

वृद्धमतेषु श्रुती कृती श्रीमान् – श्रृती एवं कृती शब्द में 'क्त' प्रत्यय तदनंतर 'इनि' प्रत्यय होने से वृद्धमतेषु शब्द में ''क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसख्यानम्'' वार्तिक से सप्तमी विभक्ति।

ऊर्जस्वलं .... शान्तमेतत् ।। 55 ।।

राजन्यकं त्वयि स्थिते अहं क्षितीन्द्रः स्याम् – एक क्रिया से दूसरी क्रिया लक्षित होने से ''यस्य च भावेन भावलक्षणम्''[95] सूत्र से 'त्वयि' तथा क्रिया 'स्थिते' में सप्तमी विभक्ति।

चतुर्थ सर्ग

अटाट्यमानः .... रक्षसा।। 2।।

बुभुक्षुणा भीमेन रक्षसा बलात् उत्क्षिप्य जह्रै – कर्मवाच्य होने से अनुक्त 'रक्षसा' एवं उसके विशेषणों में ''कर्तृकरणयोस्तृतीया''[96] सूत्र से तृतीया विभक्ति। तथा अस्त्रीलिंग गुणवाची कारण में बल में ''विभाषागुणेऽस्त्रियाम्'' सूत्र से पंचमी विभक्ति।

पुरो रामस्य .... मुनिकेतनम् ।। 5।।

शरभंगः आरात् सुतीक्ष्णमुनिकेतनं प्रदिश्य रामस्य पुरः– सम्बन्ध होने से ''शेषेषष्ठी'' सूत्र से राम में षष्ठी विभक्ति।

यूयं .... गतिम्।। 6।।

अस्मिन् वने आसिष्महि – 'आस् उपवेशने' धातु के आधार ''अस्मिन् वने'' की ''आधारोऽधिकरणम्''[97] सूत्र से अधिकरण संज्ञा तथा ''आधारोऽधिकरणे च'' सूत्र से सप्तमी विभक्ति।

* **वः स्वास्ति – '**युस्मद' शब्द का चतुर्थी बहुवचन रूप में 'वः' में ''नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलवषड्योगाच्च''[98] सूत्र से 'स्वस्ति' के योग में चतुर्थी विभक्ति।

तस्मिन् .... आश्रमान् ।। 7।।

मुनिसन्निधौ पर्णशालायाम् उवास् – क्रियार्थ क्रिया का बोध होने से ''यस्य च भावेन भावलक्षणम्''[99] सूत्र से 'मुनिसन्निधौ' व 'पर्णशालायाम्' में सप्तमी विभक्ति।

वनेषु .... विचक्रमे ।। 8।।

वासतेयेषु वनेषु निवसन् – 'नि' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु के आधार 'वन' की 'आधारोऽधिकरणम्' सूत्र से अधिकरण संज्ञा तथा ''सप्तम्यधिकरणे च''[100] सूत्र से सप्तमी विभक्ति।

अतिष्ठद्गु .... रविम् ।। 14।।

पतत्रिभ्यः प्रातस्तरां प्रबुद्धः – 'तरप्' प्रत्यय का प्रयोग होने के कारण ''पतत्रिभ्यः'' शब्द में ''पंचमी विभक्ते''[101] सूत्र से पंचमी विभक्ति।

सुपाद् .... घनेन सा ।। 17।।

प्रथिमानं दधानेन धनेन जघनेन सा – किसी प्रकार विशेषता धारण करने के कारण दधानेन, घनेन, जघनेन में ''इत्थंभूतलक्षणे''[102] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

सौमित्रे !.. पुरूषायुषम् ।। 20।। स्वभोगीनां पुरूषायुषं सहचरीं – 'कालवाची' आयुष् शब्द चर धातु में निरन्तर संयोग होने से ''कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे''[103] सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

* **माम् इच्छुः अशंकः – '**इच्छ्' धातु से ''सनासंशभिक्षु उः'' सूत्र से 'उ' प्रत्यय होने के कारण ''कृतकर्मणोः कृति''[104] सूत्र से षष्ठी प्राप्त किन्तु न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृणाम्'' सूत्र से षष्ठी का निषेध होकर ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

तामुवाच .... अरार्यसे ।। 21 ।।

स्त्रीपुंसभीषणे वने किम् अभीरूः अरार्यसे – 'ऋ गतौ' धातु से युक्त अरार्यसे के आधार 'वने' की "आधारोऽधिकरणम्"[105] सूत्र से अधिकरण संज्ञा तथा "सप्तम्याधिकरणे च" सूत्र से सप्तमी विभक्ति।

राघवं .... औपकर्णिकलोचनः ।। 24 ।।

अनुरहसं पर्णशालायां राघवं पतिम् इच्छः – 'इच्छ्' धातु का ईप्सिततम 'राघव है, अतः "कर्तुरीप्सिततमं कर्म"[106] सूत्र से 'कर्म संज्ञा' तथा 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

वपुश्चान्दनिकं .... औपजानुकौ ।। 25 ।।

यस्य वपुः चान्दनिकं – अवयव–अव्ययी भाव संबंध होने से 'शेषे षष्ठी' सूत्र से यस्य में षष्ठी विभक्ति।

बद्धा .... धत्तेऽन्यदुर्वहम् ।। 26 ।।

येन दुर्बलरक्षार्थम् औपनीविकः असि बद्धः – 'क्त' प्रत्ययान्त 'बद्ध' शब्द का प्रयोग कर्मवाच्य में हुआ है, अनुक्त कर्ता 'येन' में "कर्तृकरणयोस्तृतीया" सूत्र से तृतीया विभक्ति।

तस्याः .... मुखम् ।। 31 ।।

तस्याः मुखं लोलूयावान् – अवयव–अवयवी भाव संबंध होने से 'शेषे षष्ठी" सूत्र से तस्याः में षष्ठी विभक्ति।

अहं .... साऽब्रवीत् ।। 32 ।।

नाम्ना शूर्पणखा – प्रकृति आदि गण में पठित होने के कारण 'नामन्' शब्द में "प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम्" वार्तिका से तृतीया विभक्ति।

पर्यशाप्सीत् .... मुहुः ।। 33 ।।

बन्धूनां विक्रमं मुहुः अपिस्फवत् च – 'कृत' प्रत्यय का प्रयोग होने के कारण "कृतकर्मणोः कृति"[107] सूत्र से बन्धूनाम् में षष्ठी विभक्ति।

कृते .... तयोः ।। 35 ।।

पित्रा विवासितौ – कर्मवाच्य का प्रयोग होने से विवासितौ के अनुक्त कर्ता पितृ में "कर्तृकरणयोस्तृतीया"[108] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

मम रावणनाथाया .... क्षमम् ।। 36 ।।

युवयोः भगिन्याः – संबंध होने से "शेषे षष्ठी"[109] से षष्ठी विभक्ति।

अथ .... मृधे ।। 41 ।।

विशिखैः अहताम् – हन् क्रिया की सिद्धि में सहायक विशिखं की "साधकतमं करणम्" सूत्र से करण संज्ञा तथा "कर्तृकरणयोस्तृतीया"[110] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

तैः .... मेदिनी ।। 42 ।।

वृक्णरूग्णसम्भुग्नक्षुण्णभिन्नविपन्नकैः निमग्नोद्विग्नसंहीणैः दीनैश्च तैः मेदिनी पप्रे– 'पप्रे' का कर्म में प्रयोग होने के कारण 'मेदिनी' अभिहित होने से प्रथमा विभक्ति तथा 'तैः' और उसके विशेषण अनभिहित/अनुक्त होने से "कर्तृकरणयोस्तृतीया"[111] सूत्र से कर्ता में तृतीया विभक्ति।

शितविशिख .... लिङ्गतुल्यः ।। 45 ।।

स राक्षसानां भयम् उपनिदधे – 'कृत' प्रत्ययान्त 'भयम्' का प्रयोग होने से ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से कर्म में षष्ठी विभक्ति।

पंचमसर्ग

निराकरिष्णू .... खरदूषणौ ।। 1।।

सहिष्णू च रणं परितः चरेतुः– परितः का प्रयोग होने के कारण 'रणम्' में 'अभितः परितः समयानिकषा हा प्रतियोगेऽपि' वार्तिका से द्वितीया विभक्ति।

तौ .... रणे ।। 2।।

रणे आयुधच्छायम् अकार्ष्टाम् – 'अकार्ष्टाम्' धातु से ईप्सिततम 'आयुधच्छायम्' की ''कर्तुरीप्सिततमं कर्म''[112] सूत्र से कर्म संज्ञा तथा ''कर्मणि द्वितीया'' से द्वितीया विभक्ति। तथा 'आधारोऽधिकरणम्' सूत्र से रण की अधिकरण संज्ञा एवं ''सप्तम्यधिकरणे च''[113] सूत्र से सप्तमी विभक्ति।

अथ .... चक्रतुर्द्विषौ ।। 3।।

तौ तीक्ष्णायसैः बाणैः अधिमर्म व्याधं व्याधं यमसात् चक्रतुः – 'चक्रतुः' क्रिया की सिद्धि में सहायक 'बाणैः' एवं उसके विशेषण 'तीक्ष्णायसैः' की 'साधकतमं करणम्' सूत्र से करण संज्ञा तथा ''कर्तृकरणयोस्तृतीया''[114] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

हतबन्धु .... पतिम् ।। 4।।

वनात् पारेसमुद्रम् – वन की ''ध्रुवमपायेऽपादानम्''[115] सूत्र से अपादान संज्ञा तथा 'अपादाने पंचमी'' से पंचमी विभक्ति।

सम्प्राप्य .... रावणाऽन्तिके।। 5।।

रावणाऽन्तिके भ्रातरौ नामग्राहम् अरोदीत् – समीपवाची अन्तिक में ''सप्तम्यधिकरणे च'' सूत्र से सप्तमी विभक्ति।

दण्डकान् .... भूमिवर्धनौ ।। 6।।

दण्डकान् अध्यवाताम् – 'अध्यवाताम्' के योग में 'उपान्वध्याङ्वसः''[116] सूत्र से आधार 'दण्डक' की कर्म संज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

करिष्यमाणं .... वा भवान् ।। 9।।

भवान् अपकारे कृते अपि, अज्ञः – 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्'[117] सूत्र से अपकारे एवं कृते में सप्तमी विभक्ति।

वृतस्त्वं .... उन्मनाः ।। 10।।

श्रियम् अत्यतीनत्वं नेता न – 'नी' धातु से 'तृन्' प्रत्यय का प्रयोग होने पर 'कृर्तकर्मणोः कृति''[118] सूत्र से षष्ठी विभक्ति प्राप्त थी किन्तु ''न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम्'' सूत्र से निषेध होकर ''कर्मणि द्वितीया'' से 'अत्यन्तीनत्वम्' में द्वितीया विभक्ति।

युवजानि .... शिलीमुखैः ।। 13।।

कालकल्पैः शिलीमुखैः हन्ति – 'हन्' धातु की सिद्धि में सहायक 'शिलीमुखैः' शब्द की 'साधकतमं करणम्'[119] सूत्र से करण संज्ञा तथा ''कर्तृकरणयोस्तृतीया''[120] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

मांसानि .... दिशः ।। 14।।

रामात् बिभ्यति दिशः अश्नुवते – यहाँ रामात् की 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' सूत्र से अपादान संज्ञा तथा ''अपादाने पंचमी''[121] सूत्र से पंचमी विभक्ति।

लक्ष्मी : .... निरीक्षते ।। 17।।

कुतूहलात् पुंयोगम् आशंसुः – 'आशंसुः' धातु के क्रिया का कारण 'कुतूहल' है, उसमें 'हेतौ' सूत्र से पंचमी विभक्ति। आशंसुः कृत प्रत्ययान्त होने से 'कर्तृकर्मणोः कृति' सूत्र से षष्ठी प्राप्त किन्तु ''न लोकाव्ययनिष्ठाखलार्थतृणाम्'' सूत्र से निषेध होकर 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से पुंयोगम् में द्वितीया विभक्ति।

* **पत्युः अन्तिके स्थिता अपि – '**अन्तिक' शब्द के योग में 'दूरान्तिकार्थे षष्ठयन्यतारस्याम्''[122] सूत्र से पति शब्द में षष्ठी विभक्ति तथा ''सप्तम्यधिकरणे च''[123] सूत्र से अन्तिक शब्द में सप्तमी विभक्ति।

सारः .... निमज्जथुम् ।। 20।।

कान्तान्तरैः सार्धं तल्पे निमज्जथुं धिक् अहं मन्ये – 'सह' अर्थक 'सार्धम्' शब्द का प्रयोग होने से ''सहयुक्तेऽप्रधाने''[124] सूत्र से कान्तान्तरैः में तृतीया विभक्ति।

धिक् शब्द के प्रयोग में 'उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु द्वितीयाम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते' कारिका से ''निमज्जथुम्'' में द्वितीया विभक्ति।

न तं पश्यामि .... सुकृति भव ।। 21।।

असौ यस्य मतेः उदेजया न भवेत् – 'उदेजया' कृत शब्द के प्रयोग होने से 'कृतकर्मणोः कृति'[125] सूत्र से षष्ठी विभक्ति।

नैवेन्द्राणी .... समा ।। 22।।

इन्द्राणी तस्याः समा सीमान्तिनी न – 'तुल्याऽर्थेरतुलोपमाभ्यां तृतीयाऽन्यतरस्याम्'[126] सूत्र से तुलना होने के कारण ''तस्याः'' शब्द में षष्ठी विभक्ति।

मामुपास्त .... अनादरेक्षितः ।। 24।।

आज्ञालाभोन्मुखः दूरात् काक्षेण – ''दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया'' सूत्र से दूरवाची शब्द 'दूर' में पंचमी विभक्ति।

अतुल्यमहसा .... तद्विनिग्रहे ।। 29।।

अतुल्यमहसा रामेण सार्धं विग्रहः – 'सह' अर्थक सार्धम् के योग में ''सहयुक्तेऽप्रधाने'' सूत्र से रामेण में तृतीया विभक्ति।

अन्तर्धत्स्व .... दधद्धनुः ।। 32।।

त्वं तस्मात् रघुव्याघ्रात् अन्तर्धत्स्व – 'अन्तर्धत्स्व' का प्रयोग होने से 'अन्तर्द्धौ येनऽदर्शनमिच्छति' सूत्र से रघुव्याघ्रात् की अपादान संज्ञा तथा ''अपादाने पंचमी'' से पंचमी विभक्ति।

भवन्तं .... सार्वलौकिकम् ।। 33।।

भवन्तं हीनसन्धिम् अचीकरत् – भवन्तम् में 'हक्रोरन्यतरस्याम्'' सूत्र से अण्यन्त अवस्था के कर्ता की कर्म संज्ञा तथा ''कर्मणि द्वितीया''[127] से द्वितीया विभक्ति।

तस्य हन्तारम् – हन्तारम् कृदन्त पद के योग में ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से कर्म तस्य में षष्ठी हुई।

यमाऽऽस्यदृश्वरी .... सिंहनर्दिना ।। 34।।

तस्य विक्रमं वेति – विक्रम कृदन्त पद के योग में ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से कर्म तस्य में षष्ठी विभक्ति।

न त्वं .... अन्वभविष्यहम् ।। 35।।

त्वं तेन न अन्वभाविष्ठा – यहाँ उक्त कर्म त्वं में कर्मवाच्य होने से प्रथमा विभक्ति।

अघानि .... क्षुद्रमानसम् ।। 40।।

लोकं धिक् – 'धिक्' शब्द के योग में लोकं में 'उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु ''द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्राऽपि''[128] वार्तिका से द्वितीया विभक्ति।

चिरकालोषितं .... क्षत्त्रियकान्तिके ?।। 42।।

क्षत्रियकाऽन्तिके – अन्तिके शब्द में ''सप्तम्यधिकरणे च'' सूत्र से सप्तमी विभक्ति।

शीर्षच्छेद्यमतोऽहं .... निजिघृक्षुर्वनौकसौ ।। 45।।

वनौकसौ निजिघृक्षुः कृत्यं त्वा करिष्यामि – 'निजिधृक्षुः' कृदन्त पद के योग में ''न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृणाम्''[129] सूत्र से कर्म में षष्ठी का निषेध होकर ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

त्वां करिष्यामि – त्वां 'हक्रोरन्यतरस्याम्'' सूत्र से कर्ता में त्वां की कर्म संज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति।

तेन .... मृगाऽजिनं ।। 49।।

रामं तेन मृगेण अदुद्यूषयत् – 'अदुद्यूषयत्' क्रिया की सिद्धि में सहायक मृग है अतः ''साधकतमं करणम्''[130] से करण संज्ञा तथा ''कर्तृकरणयोस्तृतीया''[131] सूत्र से तृतीया विभक्ति।

योगक्षेमकरं .... गजविक्रमः ।। 50।।

मृगस्य अनुपदी जगाम – 'मृगस्य' में संबंध सामान्य होने से ''शेषे षष्ठी'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति।

चिरं .... क्षणदाचरभ् ।। 52।।

रामः चिरं क्लिशित्वा – कालवाची 'चिरम्' शब्द का क्रिया से निरन्तर संयोग होने के कारण ''कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे''[132] सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

एष .... राघवम् ।। 54।।

''राघवं भयात् त्रायस्व''– 'भीत्रार्थानां भयहेतु' सूत्र से त्रा धातु के प्रयोग में 'भय' की अपादान संज्ञा तथा ''अपादाने पंचमी'' से पंचमी हुई।

गते .... मृदलाबुनः ।।61।।

मृदुलाबुनः धारयः – 'धारयः' कृदन्त शब्द के योग में कर्म 'मृदुलाबनः' शब्द में 'कृर्तकर्मणोः कृति'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति।

कमण्डलुकपालेन .... दण्डवान् ।। 62।।

मृजावता शिरसा च लाक्षिके – लक्षण वाचक 'शिरसा' शब्द में ''इत्थंभूलक्षणे'' सूत्र से तृतीया विभक्ति।

हृदयङ्गम .... हेतुना ।। 67।।

केन हेतुना अभ्यैः वद – ''सर्वनाम्नस्तृतीया च''[133] सूत्र से कारणवाची के साथ सर्वनाम शब्द का प्रयोग भी हो तो दोनों में तृतीया विभक्ति।

परिपर्युदधे .... सुजीवितम् ।। 69 ।।

उदधेः परिपरि आ द्युलोकाच्च – परिपरि शब्द के योग ''अपपरीवर्जने'' सूत्र से परि की कर्मप्रवचनीय संज्ञा तथा ''पञ्चम्यापाङ्परिभिः''[134] सूत्र से उदधेः'' शब्द में पंचमी विभक्ति।

अस्मासु अधि सुजीवितम् – ''यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र सप्तमी'' सूत्र से अधि कर्मप्रवचनीय के योग में ''अस्मासु'' में सप्तमी विभक्ति।

दुःखायते .... प्रतीपायसेऽन्तिके ।। 74 ।।

यस्य अन्तिके त्वम् उत्सुकायमाना – ''सप्तम्यधिकरणे च''[135] सूत्र से अन्तिक शब्द में सप्तमी विभक्ति तथा अन्तिक के योग में ''दूरान्तिकार्थैः षष्ठयन्तरस्याम्'' सूत्र से 'यस्य' शब्द में षष्ठी विभक्ति।

कः पण्डितायमानः .... वनम् ।। 75 ।।

वैरायमाणेभ्यः त्रस्यन् – 'भीत्रार्थानाम् भयहेतु' सूत्र से 'त्रा' धातु का प्रयोग 'त्रस्यन्' में होने के कारण ''वैरायमाणेभ्यः''[136] शब्द की अपादान संज्ञा तथा 'अपादाने पंचमी' सूत्र से पंचमी विभक्ति।

* **वनम् अन्ववसत् – '**अनु' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु का प्रयोग होने से ''उपान्वध्याङ्वसः'' सूत्र से आधार 'वन' की कर्म संज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

ओजायमाना .... वचः ।। 76 ।।

दशमूर्धानं गद्‌गदं वच उवाच – द्विकर्मक 'ब्रू' धातु का प्रयोग होने से ''अकथितं च''[137] सूत्र से गौण कर्म दशमूर्धानम् की कर्म संज्ञा तथा 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' सूत्र से मुख्य कर्म वच की कर्म संज्ञा तथा दोनों में ''कर्मणि द्वितीया'' से द्वितीया विभक्ति।

निहन्ता .... रणे ।। 78 ।।

वैरकाराणां निहन्ता, सतां बहुकरः – उक्त उदाहरणों में कृदन्त शब्दों का प्रयोग होने के कारण 'कृतकर्मणोः कृतिः' सूत्र से मम, पितुः, तपस्विनां, वैरकारानां सतां में षष्ठी विभक्ति।

अध्वरेषु .... वनम् ।। 79 ।।

अध्वरेषु इष्टिनां पाता, कर्मसु सर्वदा पूर्ती यः – 'इष्टिनाम्' व पूर्ती पदों के योग के कारण ''क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम्''[138] सूत्र से क्रमशः अध्वरेषु व कर्मसु में सप्तमी विभक्ति।

पतत्रिक्रोष्टुजुष्टानि .... शेरते ।। 80 ।।

भयदे वने यस्य वाणनिकृतानि – ''यस्य च भावेन भावलक्षणम्'' सूत्र से क्रिया 'भयदे' तथा कर्म 'वने' में षष्ठी विभक्ति।

दीव्यमानं .... नाऽवगच्छसि ।। 81 ।।

शितान् बाणान् दीव्यमानम् – 'दिव्' धातु के प्रयोग में दीव्यमानम् के कारण ''दिवः कर्म च''[139] सूत्र से करण शितान् बाणान् की कर्म संज्ञा तथा 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

निर्लङ्को .... कारणम् ? ।। 87 ।।

अन्तर्गिरम् अध्यास्ते – 'अधि' उपसर्गपूर्वक 'आस्' के प्रयोग में ''अधिशीङ्स्थासां कर्म''[140] सूत्र से अन्तर्गिरम् की कर्म संज्ञा तथा ''कर्मणि द्वितीया'' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

समुद्रोपत्यका .... मैथिलि ।। 89।।

रत्नपारायणं नाम्ना लंका – नाम्ना–पूर्ववत्

आवासे .... मया सह ।। 90।।

मया सह वस – ''सहयुक्तेऽप्रधाने'' सूत्र से सह के योग में मया में तृतीया विभक्ति।

त्रस्यन्तीं .... मृगपक्षिणः ।। 95।।

यातः भयात् मृगपक्षिणः – 'शतृ' प्रत्यान्त शब्द यातः की ''भीत्रार्थनां भयहेतुः''[141] से अपादान संज्ञा तथा अपादाने पंचमी से पंचमी विभक्ति।

यशस्कर .... दुन्वन्तमत्रपम् ।। 98।।

अत्रपं त्वां धिक् – 'धिक्' के योग में त्वां में 'उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु, द्वितीया मेड्रितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते' सूत्र से द्वितीया विभक्ति।

संदर्भ सूची

1 वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी कारक प्रकरण–व्याख्याकार डॉ. अर्कनाथ चौधरी, सूत्र संख्या 2/3/9 पृष्ठ संख्या–112.
2 वहीं 1/4/48
3 वहीं 2/3/2
4 वहीं 2/2/29
5 वही 2/3/65
6 वही 1/4/46
7 वही 1/4/24
8 वही 2/3/28
9 वही सूत्र संख्या 1/4/52
10 पहि 1/4/53
11 वहि 2/3/19
12 वही 2/3/41
13 पहि 1/4/48
14 वही 2/3/2
15 वही 2/3/65
16 वही 2/3/69 पृष्ठ संख्या 254
17 वही 2/3/25
18 वही 2/3/23
19 वही 2/3/23
20 वही 2/3/23
21 वही 2/3/2
22 वही 2/3/35
23 वही 2/3/36
24 वही 1/4/42
25 वही 2/3/18
26 वही 2/3/19
27 वही 1/4/32
28 वही 2/3/13
29 वही 1/4/45
30 वही 2/3/36
31 वही 2/3/65
32 वही 1/4/42
33 वही 2/3/18
34 वही 2/3/21
35 वही 2/3/52
36 वही 2/3/56
37 वही 2/3/56
38 वही 2/3/17
39 वही 2/3/65
40 वही 2/3/69
41 वही 2/3/2
42 वही 1/4/52
43 वही 2/3/2
44 वही 2/3/65
45 वही 2/3/69
46 वही 1/4/52
47 वही 2/3/65
48 वही 1/4/42
49 वही 2/3/18
50 वही 2/3/2

51 वही 2/3/41
52 वही 1/4/52
53 वही 1/4/46
54 वही 1/4/51
55 वही 1/4/32
56 वही 1/4/51
57 वही 2/3/65
58 वही 2/3/65
59 वही 1/4/52
60 वही 2/3/65
61 वही 2/3/12
62 वही 1/4/42
63 वही 2/3/18
64 2/3/25
65 वही 1/4/51
66 वही 2/3/12
67 वही 2/3/50
68 वही 2/3/65
69 वही 2/3/65
70 वही 2/3/5
71 वही 2/3/25
72 वही 2/3/28
73 वही 2/3/25
74 वही 2/3/25
75 वही 2/3/32
76 वही 2/3/28
77 वही 2/3/52
78 वही 2/3/13
79 वही 1/4/52
80 वही 2/3/52
81 वही 2/3/25
82 वही 2/3/25
83 वही 2/3/23
84 वही 2/3/51
85 वही 1/4/52
86 वही 2/3/32
87 वही 2/3/25
88 वही 2/3/5
89 वही 2/3/8
90 वही 2/3/29
91 वही 2/3/90
92 वही 2/3/28
93 वही 1/4/90
94 वही 2/3/83
95 वही 2/3/34
96 वही 2/3/18
97 वही 2/3/150
98 वही 2/3/45
99 वही 2/3/145
100 वही 2/3/16
101 वही 2/3/37
102 वही 2/3/49
103 वही 2/3/125

104 वही 2／3／50
105 वही 2／3／18
106 वही 2／3／50
107 वही 2／3／65
108 वही 2／3／18
109 वही 2／3／42
110 वही 2／4／18
111 वही 2／3／65
112 वही 2／3／49
113 वही 2／3／3
114 वही 2／3／24
115 वही 2／3／28
116 वही 2／4／48
117 वही 2／／37
118 वही 2／3／65
119 वही 2／3／18
120 वही 2／3／25
121 वही 2／3／25
122 वही 2／3／34
123 वही 2／3／36
124 वही 2／3／19
125 वही 2／3／65
126 वही 2／3／72
127 वही 2／3／69
128 वही 2／3／53
129 वही 2／3／42
130 वही 2／3／18
131 वही 2／3／50
132 वही 2／3／5
133 वही 2／3／25
134 वही 2／3／28
135 वही 2／3／21
136 वही 2／3／35
137 वही 2／3／19
138 वही 2／3／28
139 वही 2／3／65
140 वही 2／3／53
141 वही 2／3／65
142 वही 2／3／36
143 वही 2／3／10
144 वही 2／3／36

२. 'भट्टिकाव्यम्' के पदों में सन्धि विवेचन।

प्रथम सर्ग

अभून्नृपः .... स्वयम्।।१।।

अभून्नृपः = अभूत + नृपः = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[1]।

श्रुताऽन्वितः = श्रुत + अन्वितः = अकः सवर्णे दीर्घः[2]।

इत्युदाहृतः = इति + उदाहृतः = इकोयणचि[142]।

गुणैर्वरम = गुणैः + वरम् = गुणैस् + वरम् = 'ससजुषो रुः[4] 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः[5]।

भुवनहितच्छलेन = भुवनहित + छलेन = 'छे च[6143]' 'स्तोःश्चुना श्चुः[7]

सोऽध्यैष्ट .... न्यवधीदरींश्च।।२।।

सोऽध्यैष्ट = सः + अध्यैष्ट = 'अतो रोरप्लुतादप्लुते[8]', 'आद् गुणः[9]', एङः पदान्तादति[10144]।

वेदांस्त्रिदशानयष्ट = वेदान् + त्रिदशानयष्ट = 'नश्छव्यप्रशान्[11]', 'विसर्जनीयस्य सः[12]', 'स्तोः श्चुना श्चु[13]।

अपारीत्सममंस्त = अपारीद् + सममंस्त = 'खरि च[14]।

न्यवधीदरींश्च = न्यवधीत् + अरीन् च = झलां जशोऽन्ते[15], नश्छव्यप्रशान्,[16] विसर्जनीयस्य सः[17], स्तोः श्चुना श्चुः[18]

वसुनि .... निरास्थत् ।।३।।

घनवद्वायकारीत् = घनवत् + व्यकारीत् = झलां जशोऽन्ते[19]।

सहाऽऽसनम् = सह + आसनम् = अकः सवर्णे दीर्घः[20]।

गोत्रभिदाऽध्यवात्सीत् = गोत्रभिदा + अध्यवात्सीत् = अकः सवर्णे दीर्घः[21]

त्रयम्बकादन्यमुपास्थिताऽसौ = त्रि + अम्बकात् + अन्यम् + उपास्थित + असौ = इकोयणचि, झला जशोऽन्ते, अकः सवर्णे दीर्घः[22]।

यशांसि = यशान् + सि = नश्चाऽपदान्तस्य झलि[23]

पुण्यो .... वह्निरभिप्रणीतः।।४।।

यथाऽध्वरे = यथा + अध्वरे = अकः सवर्णे दीर्घः[24]

बह्विरभिप्रणीतः = बहिः + अभिप्रणीतः = विसर्जनीयस्य सः[25], ससजुषो रुः[26] खरवसान् योविसर्जनीयः[27]

स पुण्यकीर्तिः .... ब्रह्मभिरिद्धबोधैः ।।५।।

सर्वर्तु = सर्व + ऋतु = आद्गुणः[28]

ब्रह्मभिरिद्धबोधैः = ब्रह्मभिः इद्धबोधैः = विसर्जनीयस्य सः[29], ससजुषो रुः, खरवसानयोर्विसर्जनीयस्य[30]

निर्माणदक्षस्य .... मद्योनः।।६।।

सीमेव = सीमा + इव = आद्गुणः[31]।

पद्माऽऽसन = पद्म + आसन = अकः सवर्णे दीर्घः[32]।

ऊर्ध्वस्फूरद्रत्नगभस्तिभिः = ऊर्ध्वस्फूरत् + रत्नगभस्त्रिभिः = झलां जशोऽन्ते[33]

स्थिताऽवहस्येव = स्थिता + अवहस्य + इव = अकः सवर्णे दीर्घः, आद्गुणः[34]

सद्रत्नमुक्ताफलवज्रभाञ्जि .... यस्याम् ।।७।।

सद्रत्नमुक्ता = सत् + रत्नमुक्ता = झलां जशोऽन्ते[35]

स्त्रीभिर्युतान्यप्सरसामिबौधैर्मेरोः = स्त्रीभिः + युतानि + अप्सरसाम् + इव + ओघैः + मेरोः = 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः[36]' इकोयणचि, वृद्धिरेचि[37], खरवसानयोर्विसर्जनीयः।

शिरांसीव = शिरांसि + इव = अकः सवर्णे दीर्घः[38]

अन्तर्निविष्टोज्ज्वलरत्नभासो .... गृहेभ्यः।।८।।

अन्तर्निविष्टोज्ज्वलरत्नभासः = अन्तः निविष्ट + उज्ज्वलरत्नभासः = ससजुषो रुः, आद्गुणः[39]

गवाक्षजालैरभिनिष्पतन्त्यः = गवाक्षजालैः + अभिनिष्पतन्त्यः = ससजुषो रुः[40]।

हिमाऽद्रिटंकात् = हिम + अद्रिटंकात् = अकः सवर्णे दीर्घः[41]।

गंगाऽम्बुपातप्रतिमा = गंगा + अम्बुपातप्रतिमा= अकः सवर्णे दीर्घः।

धर्म्यासु .... तिसृषूत्तमासु ।।९।।

कामाऽर्थयशस्करीषु = काम + अर्थयशस्करीषु = अकः सवर्णे दीर्घः।

लोकेऽधिगतासु = लोके + अधिगतासु = एङः पदान्तादति[42]।

सोऽभिरेमे = सः + अभिरेमे = अतोरोरप्लुतादप्लुते[43], आद्गुणः, एङ् पदान्तादति[44]।

तिसृषूक्तमासु = तिसृषु + उत्तमासु = अकः सवर्णे दीर्घः[45]।

पुत्रीयता .... पुरमृष्यश्रृङ्गः।।१०।।

वरांङ्गनाभिरानायि = वंरागनाभिः + आनायि = 'ससजुषो रुः', 'खरवसानयोर्विजर्ननीयः[46]।

अज्ञानगतिर्मनस्वी = अज्ञानगतिः + मनस्वी = खरवसानयोर्विसर्जनीयः ससजुषो रुः[47]।

ऐहिष्ट .... सुताऽनुबन्धम् ।।११।।

कृत्ताऽऽत्मा = कृत + आत्मा = अकः सवर्णे दीर्घः[48]।

मुनीन्द्रम् = मुनि + इन्द्रम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

ज्ञाताऽऽशयस्तस्य = ज्ञात + आशयः + तस्य = 'अकः सवर्णे दीर्घः विसर्जनीयस्य सः[49]।

सुताऽन ,बन्धम् = सुत + अनुबन्धम् = 'अकः सवर्णे दीर्घः[50]

रक्षांसि .... नृपतेरमार्गीत् ।।१२।।

निरास्थदंगान्ययाक्षीदभितः = निरास्थत् + अंगानि + अयाक्षीत् + अमितः = झलां जशोऽन्ते, इकोयणचि, झलां जशोऽन्ते[51]।

शेषाण्यहौषीत् = शेषाणि + अहौषीत् = 'इकोयणचि[52]।

नृपतेरमार्गीत् = नृपतेः + अमार्गीत्–खरवसानयोर्विसर्जनीयः[53]

निष्ठां .... सुपुत्रान् ।।१३।।

प्राशुर्हुतोच्छिष्टमुदारवंश्यास्तिस्रा – प्राशुः + हुत + उच्छिष्टम् + उदावंश्याः + तिस्रः = 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः, आद्गुणः', 'विसर्जनीयस्य सः[54]

कौसल्ययाऽसावि .... लक्ष्मणेन ।।१४।।

कौसल्ययाऽसावि = कौसल्यया + असावि = अकः सवर्णे दीर्घः[55]।

भरतस्ततोऽभूत् = भरतः + ततः + अभूत् – 'विसर्जनीयस्य सः', अतोरोरप्लुतादप्लुतो, आद्गुणः, एङः पदान्तादति[56]।

आर्चीद् .... वरिष्ठः।।१५।।

परमार्थ = परम + अर्थ = अकः सवर्णे दीर्घः[57]

यतिर्वशिष्ठ = यतिः + वशिष्ठः = खरवसानयोर्विसंर्जनीयः[58]

वेदोऽगवांस्तैरखिलोऽध्यगायि .... अध्यवात्सु।।१६।।

वेदोऽगवांस्तैरखिलोऽध्यगायि = वेदः + अंगवान् + तैः + अखिलः + अध्यगायि = 'अतोरोरप्लुतादप्लुते[59], आद् गुणः एङ पदान्तादति[60], नश्छव्यप्रशान्, 'विसर्जनीयस्य सः'।

शस्त्राण्युपायंसत = शस्त्राणि + उपायंतसत् : इकोयणचि[61]।

भिन्नवृत्तीन्यपि = भिन्नवृत्तीनि + अपि = इकोयणचि।

गुणिनोऽध्यावात्सुः = गुणिनः + अध्यवात्सुः = अतोरोरप्लुतादप्लुते, 'आद्गुणः', एङ् पदान्तादति[62]

ततोऽभ्यगाद् .... मधुपर्कपाणिः ।।१७।।

ततोऽभ्यगाद् – ततः + अभ्यगाद = अतोरोरप्लुतादप्लुते आद्गुणः, एङ् पदान्तादति[63]।

क्षितीन्द्रम् = क्षिति + इन्द्रम् = अकः सवर्णे दीर्घः[64]।

रक्षोभिरभ्याहत = रक्षोभिः + अभ्याहत = खरवसानयोर्विसर्जनीयः[65]।

परिरक्षणाऽर्थ = परिरक्षण + अर्थ = अकः सवर्णे दीर्घः[66]।

राजाऽऽर्जिहत् = राजा + आर्जिहत् = अकः सवर्णे दीर्घः।

ऐषी .... नृपस्तच्छिवमित्यवादीत्।।१८।।

पुनर्जन्मजयाय = पुनः + जन्मजयाय = खरवसानयोर्विसर्जनीयः[67]

रूपादिबोधान्यवृतच्च = रूपादिबोधात् + न्यवृतत् + च = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[68], स्तोः श्चुनः श्चुः[69]।

तत्त्वान्यबुद्धाः = तत्त्वानि + अबुद्धाः = 'इकोयणचि[70]।

नृपस्तच्छिवमित्यवादीत् = नृपः + तत् + शिवम् + इति + अवादीत् = 'विसर्जनीयस्य सः', 'राश्छोऽटि[71], स्तोःश्चुना श्चुः इकोयणचि।

आख्यन्मुनिस्तस्यशिवं .... लक्ष्मणेन ।।१९।।

आख्यन्मुनिस्तस्य = आख्यन्मुनिः + तस्य = विसर्जनीयस्य सः[72]।

समाधेर्विध्नन्ति = समाधेः + विघ्नन्ति खरवासनयोर्विसर्जनीयः[73]।

क्रर्तश्च = क्रतून् + च = नश्छव्यप्रशान्, स्तोः श्चुना श्चुः[74]।

निराकरिष्णुस्तृणेदु = निराकरिष्णुः + तृणेदु = विसर्जनीयस्य सः[75]

स .... वचस्तापसकुञ्जरेण।।२०।।

शुश्रुवांस्तद्वचनम् = शुश्रुवान् + तत् + वचनम् = नश्छव्यप्रशान्, झलां जशोऽन्ते[76]।

राजाऽसहिष्णुः = राजा + असहिष्णुः = अकः सवर्णे दीर्घः[77]।

शुभंयुरूचे = शुभंयुः + ऊचे – खरवसानयोर्विसर्जनीय[78]।

अहंयुनाऽथ = अहंयुना + अथ = अकः सवर्णे दीर्घः[79]।

मया .... स्वसूनुम्।।२१।।

त्वयाऽऽप्याप्समहि = त्वया + अपि + आप्स्महि = अकः सवर्णे दीर्घः, इकोणचि[80]।

परस्परार्थम् = परस्पर + अर्थम् = अकः सवर्णे दीर्घेः[81]

क्रुध्यन्कुलं .... सुतस्य।।२३।।

विप्रवह्निर्यास्यन्सुतस्तप्स्यति = विप्रवह्निः + यास्यन्सुतः + तपस्यति खरवसानयोर्विसर्जनीयः, विसर्जनीयस्य स[82]।

ततोऽनुजज्ञे : ततः + अनुजज्ञे = अतोरोप्लुतादप्लुते, आद्गुणः, एङः पदान्तादति[83]।

प्रयाष्यतः .... लक्ष्मणोऽभूत।।२५।।

कृत्स्नजिताऽस्त्रशस्त्रः = कृत्स्नजिता + अस्त्रशस्त्रः = अकः सवर्णे दीर्घ[84]।

लक्ष्मणोऽभूत् = लक्ष्मणः + अभूत् = 'अतोरोरप्लुतादप्लुतेः[85]।

इषुमति .... रूदन्माङ्गलिक्यः।।२६।।

दन्दशूकाञ्जिघांसौ = दन्दशूकान् + जिघांसौ = 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः[86]।

घनुररिभिरसह्यम् = धनुः अरिभिः + असह्यम् = खरवसनयोविसर्जनीयः[87]।

बद्धचित्राऽंगुलित्रे = बद्धचित्र + अंगुलित्रे = अकः सवर्णे दीर्घः[88]।

अथ ....पक्षिणश्चाऽनुकूलाः।।२७।।

जगदुरनीचैराशिषस्तस्य = जगदुः + अनीचैः + आशिषः + तस्य = खरवसानयोर्विसर्जनीयः, विसर्जनीयस्य सः[89]।

विप्रास्तुमुल = विप्राः + तुमुल = विसर्जनीयस्य सः[90]।

बाहुस्तरुषु = बाहुः + तरुषु = विसर्जनीयस्य सः।

चुकुवुरुच्चैः = चुकुवुः + उच्चैः खरवसानयोविसर्जनीयः[91]।

पक्षिणश्चाऽनुकुलाः = पक्षिणः + च + अनुकुलाः = विसर्जनीयस्य सः, स्तोः श्चुना श्चुः, अकः सवर्णे दीर्घः[92]।

द्वितीय सर्ग

वनस्पतीनां ....शरदं ददर्श।।१।।

समन्ताच्छ्रियम् = समन्तात् + श्रियम् = 'शश्छोऽटि[93], स्तोः श्चुना श्चुः।

तरङ्गसङ्गाञ्चपलैः .... षट्पदानि।।२।।

तरंगसंगाच्चपलैः = तरंगसङ्गात् + चपलैः = स्तोःश्चुना श्चुः[94]।

पलाशैर्ज्वालाश्रियम् = पलाशैः + ज्वालाश्रियम् = खरवसानयोर्विसर्जनीयः[95]।

साऽतिशयाम् = स + अतिशयाम् = अकः सवर्णे दीर्घः[96]।

दीप्ताऽग्निरुचीनि = दीप्त + अग्निरुचीनि = अकः सवर्णे दीर्घः।

रेजुस्ताम्रोत्पलान्याकुल = रेजुः + ताम्र + उत्पलानि + आकुल = विसर्जनीयस्य सः[97]।

आद्गुणः इकोयणचि।

बिम्बागतैस्तीरवनैः .... स्थलपद्महासैः।।३।।

बिम्बागतैस्तीरवनैः = बिम्ब + आगतैः + तीरवनैः = अकः सवर्णे दीर्घः, विसर्जनीयस्य सः[98]।

विलोक्याऽपहृताम् = विलोक्य + अपहृताम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

साऽमर्षतयेव = स + अमर्षतया + इव = अकः सवर्णे दीर्घः, आद्गुणः[99]।

निशातुषारैर्नयनाऽम्बुकल्पैः .... तीरतरुर्दिनादौः।।४।।

निशातुषारैर्नयनाऽम्बुकल्पैः = 'निशातुषारैः + नयन + अम्बुकल्पैः = खरवसानयोर्विसर्जनीयः अकः सवर्णे दीर्घः[100]।

पत्राऽन्त = पत्र + अन्तः = अकः सवर्णे दीर्घः।

वनानि .... लक्ष्मीमालोकयाञ्चक्रुरिवादरेण।।५।।

सरोजैश्च = सरोजैः + च = विसर्जनीयस्य सः, स्तोःश्चुना श्चुः[101]।

आलोकयाञ्चक्रुरिवादरेण = आलोकयाञ्चक्रुः इव + आदरेण = खरवसानयोर्विसर्जनीयः, अकः सवर्णे दीर्घः[102]।

प्रभातवाताहतिकम्पिताकृतिः .... अन्यसङ्गमम्।।६।।

वाताहति = वात + आहति = अकः सवर्णे दीर्घः[103]।

कम्पिताकृतिः = कम्पित + आकृतिः अकः सवर्णे दीर्घः[104]।

कुपितेवः कुपिता + इव = आद्गुणः[105]।

संसहतेऽन्यसंगमम् = संसहते + अन्यसंगमम् = एङः पदान्तादति[106]

दत्तावधानं .... मृगावित् ।।७।।

आकर्णयन्नुत्सुक = आकर्णयन् + उत्सुक = ङमो ह्रस्वादचिङ्मुण् नित्यम्[107]।

सनादाल्ँल्लक्ष्ये = हंसनादान् + लक्ष्ये = तोर्लि[108]।

दत्तावधानम् = दत्त + अवधानम् = अकः सवर्णे दीर्घः[109]।

गिरेनितम्बे मरूता .... लक्ष्मीम् ।।८।।

तोयाऽवशेषेण = तोय + अवशेषेण = अकः सवर्णे दीर्घः।

सरिन्मुखाऽभ्युच्चयम् = सरित् + मुख + अभ्युच्चयम् = यरोऽनुनासिकेऽनुसिको वा[110]।

शैलाऽधिपस्याऽनुचकार = शैल + अधिपस्य + अनुचकार = अकः सवर्णे दीर्घः।

गर्जन् हरिः .... मृगेन्द्रनादान् ।।९।।

साऽम्भसि = स + अम्भसि = अकः सवर्णे दीर्घः।

प्रतर्कयन्नन्यमृगेन्द्रनादान् = प्रतर्कयन् + अन्य = ङमो ह्रस्वादचिङमुण् नित्यम्, मृग + इन्द्रनादान् = आद्गुणः[111]।

अदृक्षताऽम्भांसि .... व्यतिषङ्गवांश्च ।।१०।।

अदृक्षताऽम्भांसि = अदृक्षत + अम्भांसि = अकः सवर्णे दीर्घः[112]।

नवोत्प्लानि = नव + उत्पलानि = आद्गुणः[113]।

चाऽश्रोषत = च + अश्रोषत = अकः सवर्णे दीर्घः।

सुगन्धस्तेनाऽरविन्दव्यतिषंगवांश्च = सुगन्धः + तेन + अरविन्द = विसर्जनीयस्य सः, अकः सवर्णे दीर्घः। व्यतिषंगवान् + च। = 'नश्छव्यप्रशान्[114]।

लताऽनुपातं कुसुमान्यगृह्णात् .... आस्त।।११।।

लताऽनुपातम् = लता + अनुपात् = अकः सवर्णे दीर्घः।

कुसुमान्यगृह्णात् = कुसुमानि + अगृह्णात् = इकोयणचि[115]।

तिग्मांऽशुरश्मि .... संभृतानि ।।१२।।

तिग्मांशु = तिग्म + अंशु = अकः सवर्णे दीर्घः।

रश्चिमच्छुरिताऽन्यदूरात् = रश्मि + छुरिता + अन्यदूरात = 'छेच्'[116], स्तोःश्चुना श्चुः, अकः सवर्णे दीर्घः।

सलिलान्यपश्यत् = सलिलानि + अपश्यत् = इकोयणचि[117]।

दिव्यापिनीः .... वितृणाऽन्तरालाः ।।१३।।

ऋज्वायताः = ऋजु + आयताः 'इकोयणचि[118]।

सस्यविशेषपंक्तिस्तुतोष: = सस्यविशेषपंक्तिः + तुतोष = विसर्जनीयस्य सः[119]।

वितृणाऽन्तरालाः = वितृण + अन्तरालाः = अकः सवर्णे दीर्घः[120]।

वियोगदुःखाऽनुभव .... गोष्ठान् ।।१४।।

दुःखानुभवाऽनभिज्ञैः = दुःख + अनुभव + अनभिज्ञैः = अकः सवर्णे दीर्घः।

नृपांऽशम् = नृप + अंशम्। = अकः सवर्णे दीर्घः।

हितैरमायैरैक्षिष्टः = हितै= अमायै + ऐक्षिष्ट – खरवासानयोर्विसर्जनीयः, ससजुषेरुः[121]।

स्त्रीभूषणं .... विलोक्य ।।१५।।

चारुण्यवक्राण्यपि = चारूणि + अवक्राणि + अपि = 'इकोयणचि[122]।

ऋजूंश्च = ऋजून् + च = 'नश्छव्यप्रशान्[123], स्तोः श्चुनाश्चतुः।

विवृत्तपार्श्वं .... अनन्दयत्तम् ।।१६।।

रूचिराऽङ्गहारं = रुचिरा + अंङ्गहारम् = अकः सवर्णे दीर्घः[124]।

गोपांगना = गोप + अंगना = अकः सवर्णे दीर्घः।

विचित्रमुञ्चैः .... मृगाणाम् ।।१७।।

मेघाऽत्ययोपात्तवनोपशोभम् = मेघ + अत्यय + उपात्त = अकः सवर्णे दीर्घः, आद्गुणः[125]।

वन + उपशोभम् = आद्गुणः

सितारविन्दप्रचयेषु .... श्रोत्रसुखैनिनादैः ।।१८।।

सिताऽरविन्द = सिता + अरविन्द = अकः सवर्णे दीर्घः।

कुन्दाऽवदात्ताः = कुन्द + अवदाता = अकः सवर्णे दीर्घः।

न तज्जलं .... यन्मनः ।।१९।।

तज्जलम् = तत् + जलम् = 'झला जशोऽन्ते[126]

तन्नः = तद् + नः = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[127]।

यन्मनः = यत् + मनः

पदोऽसौ = पदः + असौ = 'अतोरोरप्लुतादप्लुते', आद्गुणः, एङः पदान्तादति[128]।

यत्न = यत् + न = यरोऽनुनासकेऽनुनासिको वा[129]।

तं यायजूकाः .... जगदर्चनीयम् ।।२०।।

भिक्षुमुख्यैस्तपः कृशा = भिक्षुमुख्यैः + तपस्कृशा = विसर्जनीयस्य सः[130]।

शान्त्युदकुम्भ = शान्ति + उदकुम्भ = इकोयणचि[131]।

चाऽन्ये = च + अन्ये = अकः सवर्णे दीर्घः[132]।

प्रानर्चुरर्च्या = प्रानर्चुः + अर्च्या = ससजुरुषो खरवसानयोर्विसर्जनीयः[133]।

विद्यामथैनं .... यातुधानान् ।।२१।।

रक्षोगणम् = रक्षः + गणम् = 'हशि च[134]।

अध्यापिपद् = अधि + आपिपद् = इकोयणचि।

यथावन्निघातयिष्यन् = यथावत् + निघातयिष्यन् = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[135]।

आयोधने .... श्रेयसि जागरूकः ।।२२।।

महाऽऽहवाय : = महा + आहवायः = अकः सवर्णे दीर्घः।

तं विप्रदर्शं .... निजधान रामः।।२३।।

ताडकाऽऽख्याम् = ताडका + आख्याम् = अ कः सवर्णे दीर्घः।

भासुराऽस्त्र = भासुरा + अस्त्र

अथाऽऽलुलोके .... चारूपतत्त्रिशिञ्जम् ।।२४।।

अथाऽऽलुलोके = अथ + आलुलोके = अकः सवर्णे दीर्घः।

शिखाऽञ्जन = शिखा + अञ्जन = अकः सवर्णे दीर्घः[136]।

तपोवनम् = तपः + वनम् = हरिश च, आद्गुणः[137]।

प्राध्ययनाऽभिभूत = प्राध्ययन + अभिभूत = अकः सवर्णे दीर्घः।

क्षुद्रान्न जक्षुर्हरिणान् .... लता विलोलाः ।।२५।।

मगेन्द्रा = मृग + इन्द्रा = आद्गुणः[138]।

अपूपुजन् .... क्षितिपालपुत्रौ।।२६।।

माल्यैरातिथ्य = माल्यैः + आतिथ्य = खरवसानयोर्विसर्जनीयः[139]।

आसनाऽऽदि = आसन + आदि = अकः सवर्णे दीर्घः।

दैत्याऽभिभूतस्य .... अभाषिषाताम् ।।२७।।

दैत्याऽभिभूतस्य = दैत्य + अभिमूतस्य = अकः सवर्णे दीर्घः।

दोर्भिर्भुवनस्य = दोर्भिः + भुवनस्य = खरवसानयोर्विसर्जनीयः[140]।

तपोघनैः = तपः + घनैः = हशि च, आद्गुणः।

तान् प्रत्यवादीदथ .... नोऽरिसमिन्धनेषु ।।२८।।

राघवोऽपि = राघवः + अपि = अतोरोरप्लुतादप्लुते[142]।

अथेप्सितम् = अथ + ईप्सितम् = आद्गुणः।

तपोमरुद्भिः = तपः + मरुद्भिः = हशि च, आद्गुणः।

शराऽग्निः = शर + अग्निः = अकः सवर्णे दीर्घः।

नोऽरि = नः + अरि = अतोरोरप्लुतादप्लुते।

प्रतुष्टुवुः कर्म .... प्रसर्पत् ।।२९।।

प्रक्लृप्तैस्ते + ते = विसर्जनीयस्य सः[143]।

यज्ञियैर्द्रव्यगणैर्यथावत् = यज्ञियैः + द्रव्यगणैः + यथावत् = ससजुषोरुः[144], 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः'।

यातुधानैश्चिचिते = यातुधानैः + चिचिते = विसर्जनीयस्य सः, 'स्तोः श्चुना श्चुः[145]।

आपिङ्गरूक्षोर्ध्व .... चाऽऽनशेऽब्दैः।।३०।।

रूक्षोर्ध्व = रक्ष + ऊर्ध्व = 'हशि च', आद्गुणः[146]।

चाऽऽनशेऽब्दैः = च + आनशे + अब्दैः = अकः सवर्णे दीर्घः, एङः पदातादति[147]।

अधिज्यचापः .... शुद्धेषुरमन्दकर्षी ।।३१।।

उदञ्चिताऽक्षोऽञ्चित = उदञ्चित + अक्षः + अञ्चित = अकः सवर्णे दीर्घः, अतोरोरप्लुतादप्लुते[148], 'आद्गुणः', 'एङः पदान्तादति'।

ताँल्लक्ष्मणः = तान् + लक्ष्मणः = तोर्लि[149]।

गाधेयदिष्टं .... महार्थम् ।।३२।।

रामोऽपि = रामः + अपि = अतोरोरप्लुतादप्लुते, आद्गुणः, एङ् पदान्तादति।

महार्थम् = महा + अर्थम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

आत्मम्भरिस्त्वं .... न कस्मात् ।।३३।।

पिशितैर्नराणाम् = पिशितैः + नराणाम् = खरवसानयोविसर्जनीयः[150]।

अद्मोद्विजान् .... वेदवृत्ते ।।३४।।

प्रेतनराऽधिवासम् = प्रेतनरा + अधिवासम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

नैवाऽध्यकारिष्महि = न + एव + अध्यकारिष्यमहि = वृद्धिरेचि[151], अकः सवर्णे दीर्घः।

धर्मोऽस्ति .... धतकार्मुकेषुः।।३५।।

धर्मोऽ स्ति = धर्मः + अस्ति = अतो रोरप्लुतादप्लुते, आद्गुणः, एङः पदान्तादति।

राक्षयाऽयमन्यो = राक्षस + अयमन्योः = अकः सवर्णे दीर्घः[152]।

ममाऽपि = मम + अपि = अकः सवर्णे दीर्घः।

इत्थंप्रवादं .... प्रधनान्निरास्थत् ।।३६।।

रघुनन्दनोऽथ = रघुनन्दनः + अथ = अतोरोरप्लुतादप्लुते, आद्गुणः[153], एङः पदान्तादति।

प्रधनानिरास्थत् = प्रधनात् + निरास्थत् = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[154]।

जग्मुः प्रसादं .... मुनिना कुमार।।३७।।

वचश्च = वचः + च = विसर्जनीयस्य सः, स्तोः श्चुना श्चुः[155]।

महीय्यमाना .... न भूमिः।।३८।।

भवताऽतिमात्रम् = भवता + अतिमात्रम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

सुराऽध्वरे = सुर + अध्वरे = अकः सवर्णे दीर्घः।

दिवोऽपि = दिवः + अपि = अतो रोरप्लुतादप्लुते[156], आद्गुणः, एङः पदान्तादति।

बलिबबन्धे .... गुरुर्न तस्य ।।३९।।

जह्लेऽमृतम् = जह्ले + अमृतम् = एङ्ः पदान्तादति[157]।

कल्पान्तः = कल्प + अन्तः = अकः सवर्णे दीर्घः।

तथोहे = तथा + ऊहे = आद्गुणः।

भारोऽतिगुरू = भारः + अतिगुरूः = अतोरोरप्लुतादुप्ते, आद्गुणः, एङः पदान्तादति।

येनैष = येन + एषः = वृद्धिरेचि[158]।

इति ब्रुवाणो .... निजिघृक्षयिष्यन् ।।४०।।

मखान्ते = मख + अन्ते = अकः सवर्णे दीर्घः।

इतः स्म .... नृसिंहौ ।।४१।।

जनकाऽऽश्रमस्थं = जनक + आश्रमस्थ–अकः सवर्णे दीर्घः[159]।

तावौजिहताम् = तौ + ओजिकताम्–एचोऽयवायावः[160]।

अजिग्रहतं .... रघुनन्दनस्तत्।।४२।।

धनुस्तद्येनार्दिदद् = धनुः + तत् + येन + आर्दिदत् विसर्जनीयस्य सः[161], झलां जशोऽन्ते, अकः सवर्णेदीर्घः।

बाह्वोर्हसन्नभाङ्क्षीद्रघुनन्दनस्तत् = वाह्वोः + हसन् + अभांक्षीत् + रघुनन्दनः + तत् = खरवसानयोर्विसर्जनीयः, ङमो ह्रस्वादचिङमुण् नित्यम[162], झलां जशोऽन्ते, विसर्जनीयस्य सः

ततो नदीष्णान् .... मैथिलमर्त्यमुख्यः ।।४३।।

गिरिज्ञाह्वायकान् = गिरिज्ञा + आह्वायकान् = 'अकः सवर्णे दीर्घः'।

क्षिप्रं .... मिथिलामगच्छत् ।।४४।।

ततोऽध्वन् = ततः + अध्वन् = अतोरोरप्लुतादप्लुते[163], आद्गुणः, एङ्ः पदान्तादति।

वृद्धतमोऽपि = वृद्धतमः + अपि, अतोरोरप्लुतादप्लुते, आद्गुणः, एङः पदान्तदति।

वृन्दिष्ठं .... वरिष्ठम् ।।४५।।

सुधाऽधिपानाम् = सुधा + अधिपानाम् अकः सवर्णे दीर्घः।

गुरुवद्गरिष्ठम् = गुरुवत् + गरिष्ठम् = झलां जशोऽन्ते[164]।

सदृङ्महान्तम् = सदृक् + महान्तम् = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[165]

सुक्षताधिवासम् = सुक्षत + अधिवासम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

त्रिवर्गपारीणमसौ .... बभासे।।४६।।

ध्यासन्नासनम् = अध्यासयन् + आसनम् = ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्[166]।

हिरण्यमयी शाललतेव .... मैथिली ।।४७।।

. शाललतेव = शाललता + इव = आद्गुणः[167]।

स्थास्नुरिवाऽचिर + प्रभा = स्थास्नु: + इव + अचिरप्रभा = खरवसानयोर्विसर्जनीय:, अक: सवर्णे दीर्घ:[168]।

शशांङ्क = शश + अंङ्क = अक: सवर्णे दीर्घ:।

देवताऽऽकृति: = देवता + आकृति: = अक: सवर्णे दीर्घ:।

लब्धां ततो .... रघुवर्ग्यलक्ष्मीम्।।४८।।

सद्रत्न = सत् + रत्न = झलां जशोऽन्ते[169]।

सुप्रातम् .... बलमध्वनीनम् ।।४९।।

आस्तिकाऽऽढयम् = आस्तिक + आढ्यम = अक: सवर्णे दीर्घ:।

विशङ्कटो .... जामदग्न्य:।।५०।।

विशंङ्कटो वक्षसि = विशंङ्कट: + वक्षसि = हशि च[170], आद्गुण:।

उच्चैरसौ .... अनुनिनीषुरूचे।।५१।।

आह्वतेदम् = आह्वत + इदम् = आद्गुण:।

माऽतियासी = मा + अतियासी = अक: सवर्णे दीर्घ:।

क्षितीन्द्र: = क्षिति + इन्द्र: = अक: सवर्णे दीर्घ:।

क्षितीन्द्रोऽनुनिनीषु: = क्षितीन्द्र: + अनुनिनीषु: = अतो रोरप्लुतादप्लुते[171] , आद्गुण:, एङ: पदान्तादति।

अनेकशो .... राम! रामे।।५२।।

काऽऽस्थाऽर्भके = का + आस्था + अर्भके = अक: सवर्णे दीर्घ:।

अर्भकेऽस्मिन् = अर्मके + अस्मिन् = एङ: पदान्तादति[172]।

अजीगणत् .... तस्य ।।५३।।

विजितांश्च = विजितान् + च = 'नश्छव्यप्रशान्' स्तो: श्चुना श्चु:[173]।

जिते नृपाऽरौ .... मार्गान् ।।५४।।

नृपाऽरौ = नृप + अरौ = अक: सवर्णे दीर्घ:[174]।

शब्दायमानान्यशनै: = शब्दमानानि + अशनै: = इकोयणचि[175]।

राज्ञाऽनुमते: = राज्ञा + अनुमते = अक: सवर्णे दीर्घ:।

जगाहिरेऽनेक = जगाहिरे + अनेक = एङः पदान्तादति[176]।

अथ पुरुजक्योगात् .... तूर्णमायादयोध्याम् ।।५५।।

योगान्नेदयत् = योगात् + नेदयत् = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[177]।

अचेतन्नीर = अचेतत् + नीर = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा।

तृतीय सर्ग

वधेन संख्ये .... नाऽऽसीत्।।१।।

पिशिताऽशनानाम् = पिशित + अशनानाम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

क्षत्राऽन्तकस्याऽभिभवेन = क्षत्र + अन्तकस्य + अभिमवेन = अकः सवर्णे दीर्घः।

चैव = च + एव = वृद्धिरेचि[178]।

नाऽऽसीत् = न + आसीत् = अकः सवर्णे दीर्घः।

ततः सुचेतीकृतपौरभत्यो .... समनीचकार।।२।।

राज्येऽभिषेक्ष्ये = राज्ये + अभिषेक्ष्ये = एङः पदान्तादति।

इत्यनीचैः = इति + अनीचैः = इकोयणचि।

भूयोऽपि = भूयः + अपि = अतोरोरप्लुतादप्लुते[179], आद्गुणः एङः पदान्तादति

आदिक्षत् .... महार्धरत्नम् ।।३।।

महार्घरत्नम् = महा + अर्घरत्नम् = अकः सवर्णे दीर्घः[180]।

प्रास्थापयत् .... तीर्थजलाऽर्थमाशु।।४।।

तीर्थजलार्थम् = तीर्थजलम + अर्थम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

उक्षाम्प्रचक्रुः .... नियुक्ताः।।५।।

दिशश्च = दिशः + च = विसर्जनीयस्य सः, स्तोः श्चुना श्चुः[181]।

विचित्रैरर्थेषु = विचित्रैः + अर्थेषु = खरवसानयोर्विसर्जनीयः, ससजुषोरुः[182]।

मातामहा .... वनप्रयाणम् ।।६।।

महाऽऽवास = महा + आवास – अकः सवर्णे दीर्घः।

कर्णेजथैः .... सनरेन्द्रमृत्युम्।।७।।

जनाऽपवादम् = जन + अपवादम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

नरेन्द्र = नर + इन्द्र = आद्गुण:[183]।

वसुनि .... निचख्ने ।।८।।

देशांश्च = देशान् + च = नश्छव्यप्रशान्[184], स्तो: श्चुना श्चु:।

तयाऽवाजज्ञे = तया + अवजज्ञे = अक: सवर्णे दीर्घ:।

भरताऽभिषेक: = भरत + अभिषेक: = अक: सवर्णे दीर्घ:।

ततः प्रविव्राजयिषुः .... शोचन् ।।९।।

अस्याभिगमम् = अस्या + अभिगमम् = अक: सवर्णे दीर्घ:[185]।

सीताऽनुचरस्य = सीता + अनुचरस्य = अक: सवर्णे दीर्घ:।

केचित् .... जगाद् ।।१०।।

केचिन्निनिन्दु: = केचित् + निनिन्दु: = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[186]।

ऊचुस्तथाऽन्ये = ऊचु: + तथा + अन्ये = विसर्जनीयस्य स:, अक: सवर्णे दीर्घ:।

इत्यपपर: = इति + अपर: = इकोयणचि[187]।

गतो वने .... मनांसि।।११।।

भवितेति = भविता + इति = आद्गुण:[188]।

मन्यवोऽन्ये = मन्यव: + अन्ये = अतोरोरप्लुतादप्लुते[189], आद्गुण:, एङ् पदान्तादति।

जनताऽतिमात्रम् = जनता + अतिमात्रम् = अक: सवर्णे दीर्घ:।

कुमाराऽनगमे = कुमार + अनुगमे = अक: सवर्णे दीर्घ:।

प्रस्थास्यमानावुपसेदुषस्तौ .... कृताऽर्थान् ।।१२।।

प्रस्थास्यमानावुपसेदुषस्तौ = प्रस्थास्यमानौ + उपसेदुष: + तौ = एचोऽयवायाव:[190], विसर्जनीयस्य स:, स्तो: श्चुना श्चु:।

शोचतेहाऽभ्युदये = शोचत + इह + अभ्युदये आद्गुण:, अक: सवर्णे दीर्घ:।

बताऽस्मान् = बत + अस्मान् = अक: सवर्णे दीर्घ:।

कृतार्थान् = कृत + अर्थान् = अक: सवर्णे दीर्घ:।

असृष्ट यायश्च .... वनस्थ मोक्षः।।१३।।

यश्च = य: + च = विसर्जनीयस्य स:, स्तो: श्चुना श्चु:[191]।

सर्वदाऽस्मान् = सर्वदा + अस्मान् = अक: सवर्णे दीर्घ:।

महोपकारस्य = महा + उपकारस्य = आद् गुण:।

विद्युत्प्रणाशं .... गुरुणाम् ।।१४।।

यद्वोर्ध्वशोषम् = यत– + वा + उर्ध्वशोषम् = झलां जशोऽन्ते[192], आद्गुण:।

दुरापेऽपि = दुरापे + अपि = एङ: पदान्तादति[193]।

शासनेऽवास्थित = शासने + अवास्थित = एङ्:पदान्तादति।

पौरा निवर्तध्वमिति .... स्मः सूतम् ।।१५।।

शोकाऽपनुदा = शोक + अपनुदा = अक: सवर्णे दीर्घ:[194]।

दर्शताऽन्यम् = दर्शत + अन्यम् = अक: सवर्णे दीर्घ:।

निवर्तयेत्याह = निवर्तय + इति + आह = आद् गुण:, इकोयणचि[195]

ज्ञात्वेङ्गितै .... अपजगाम रामः ।।१६।।

प्रातश्छलेनाऽपजगाम: – प्रात: + छलेन + अपजगाम: = विसर्जनीयस्य स:[196], स्ता: श्चुना श्चु:, अक: सवर्णे दीर्घ:।

अस्त्राक्षुरस्त्रं .... न्यवृतन्मनोभिः ।।१७।।

रुवन्तो मुहु: = रुवन्त: + मुहु: = हशि च[197], आद् गुण:।

सूतोऽपि गङ्गासलिलै .... पुरमाविवेश।।१८।।

सूतोअपि = सूत: + अपि = अतोरोरप्लुतादप्लुते[198], आद्गुण, एङ:, पदान्तादति।

सहाऽश्वम् = सह + अश्वम् = अक: सवर्णे दीर्घ:

प्रतीय सा .... सर्वचेष्टा।।१९।।

शीतांऽशु = शीत + अंशु = अक: सवर्णे दीर्घ:।

कृतेव = कृता + इव = आद् गुण:[199]।

अन्वितापि = अन्वित + अपि = अक: सवर्णे दीर्घ:।

शोकाऽन्धकार = शोक + अन्धकार = अक: सवर्णे दीर्घ:।

विलोक्य .... वस्त्रे।।२०।।

सत्त्वान्नृपतिश्च्युताशः = सत्त्वात् + नृपतिः + च्युताशः = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[200], विसर्जनीयस्य सः, स्तोः श्चुना श्चुः।

नैषीद् = न + ऐषीत् = वृद्धिरेचि[201]।

व्यलिपन्न = वि + अलिपन्न = इकोयणचि[202]।

आसिष्ट नैकत्र .... द्युनिवासभूयम् ।।२१।।

नैकत्र = न + एकत्र = वृद्धिरेचि।

कृताऽकृतेभ्यः = कृत + अकृतेभ्यः = अकः सवर्णे दीर्घः।

शोकाऽग्निनाऽगाद् = शोक + अग्निना + अगाद् = अकः सवर्णे दीर्घः।

विचक्रशुर्भूमि .... चैव ।।२२।।

केशाँल्लुलुञ्चुः = केशान् + लुलुञ्चुः = तोर्लि[203]।

विभूषणान्युन्मुमुचुः = विभूषणानि + उद् + मुमुचुः = इकोयणचि।

चैव = च + एव = वृद्धिरेचि।

ताः सान्त्वयन्ती .... यूनः ।।२३।।

दूतांश्च = दूतान् + च = नश्छव्यप्रशान्, स्तोः श्चुना श्चुः[204]।

राजात्मजम् = राजा + आत्मजम् = अकः सवर्णे दीर्घः[205]।

सुप्तो नभस्तः .... राज्ञः।।२४।।

भरतोऽपि = भरतः + अपि = अतोरोरप्लुतादप्लुते, आद्गुण, एङः पदान्तादति[206]

अशिश्रवन् .... गुरूणाम् ।।२५।।

नात्ययिकम् = न + आत्ययिकम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

यदार्थम् = यदा + अर्थम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

जाताञ्जिहिषः = जात + आञ्जिहिषः = अकः सवर्णे दीर्घः[207]।

बन्धूनशङ्किष्ट .... अरासिषुश्च ।।२६।।

सम्यङ्नाऽयासिषुः = सम्यक् + न + अयासिषु = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[208], अकः सवर्णे दीर्घः।

स प्रोषिवानेत्य .... पणाऽऽयान् ।।२७।।

जनौद्य = जन + ओध = वृद्धिरेचि[209]।

चोपलेभे = च + उपलेभे = आद्‌गुणः[210]।

पणाऽऽयान् = पण + आयान् = अकः सवर्णे दीर्घः

चक्रन्दुः .... प्रतिपूर्णमन्या ।।२८।।

मातरोऽभ्यर्णम् = मातरः + अभ्यर्णम् – अतोरोरप्लुतादप्लुते[211], आद्‌गुणः, एङः पदान्तादति।

पुरोहिताऽमात्य = अकः सवर्णे दीर्घः।

मुखाश्च = मुखाः + च = विसर्जनीयस्य सः, स्तोःश्चुना स्चुः[212]।

दिदृक्षमाणः .... वृत्तमस्मैः।।२९।।

नैक्षत = न + ऐक्षत् = वृद्धिरेचि।

आव्धभीम .... न्यमाङ्क्षीत्।।३०।।

शैश्वीयमानाऽरुण = शेश्वीयमान + अरुण = अकः सवर्णे दीर्घः।

मुहुश्चाऽविरतम् = मुहुः + च + अविरतम् = विसर्जनीयस्य सः[213], स्तोःश्चुना श्चुः, अकः सवर्णे दीर्घः।

नृपात्मजौ .... बह्वनर्थम् ।।३१।।

नृपात्मजौ = नृप + आत्मजौ = अकः सवर्णे दीर्घः[214]।

केकटयुपज्ञं = केकय्यी + उपज्ञम् = इकोयणचि[215]।

नैतन्मतं मत्कमिति .... रोरूदावान् ।।३२।।

नैतन्मतम् = न + एतत् + मतम् = वृद्धिरेचि, यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[216]।

सहस्त्रशोऽसौ = सहस्त्रशः + असौ = अतोरोरप्लुतादप्लुत[217]

तं सुस्थयन्तः .... अध्वरपात्रजातम्।।३३।।

नरेन्द्रम् = नर + इन्द्रम् = आद्‌गुणः[218]।

अन्त्याहुतिम् = अन्त्य + आहुतिम् = अकः सवर्णे दीर्घः[219]।

चिचीषयन्तोऽध्वर–चिचीषयन्तः + अध्वर = अतोरोरप्लुतम्दप्लुते[220], आद्‌गुणः, एङःपदान्तादति।

उद्‌क्षिपन् .... चन्दनानि।।३४।।

कम्बूंश्च = कम्बून् + च = नश्छव्यप्रशान[221], स्तोःश्चुना श्चुः।

श्रोत्राक्षिनासावदनं .... चिताग्निम्।।३५।।

कृत्वाऽजिने = कृत्वा + अजिने = अकः सवर्णे दीर्घः[222]।

प्राक्शिरसम् = प्राग् + शिरसम् = खरिच[223]।

चिताऽग्निम् = चिता + अग्निम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

कृतेषु .... सपौरः ।।३६।।

पिण्डोदक = पिण्ड + उदक = आद्गुणः।

हित्वाऽभिषेकम् = हित्वा + अभिषेकम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

प्रायादरण्यम् = प्रायात् + अरण्यम् = झलां जशोऽन्ते[224]।

शीघ्रायमाणैः .... रथाऽश्वमिश्रेः।।३७।।

ककुभोऽश्नुवानैः = ककुभः + अश्नुवानैः = अतोरोरप्लुतादप्लुते[225]।

नागेन्द्र = नाग + इन्द्र = आद्गुणः[226]

रथाऽश्वमित्रैः = रथ + अश्वमित्रैः – अकः सवर्णे दीर्घः[227]।

उच्चिक्यिरे .... विशश्रमुश्च ।।३८।।

पुलिनान्यशंकम् = पुलिनानि + अशंकम् = इकोयणचि[228]।

सम्प्राप्य तीरं .... अवृत्तयस्ते।।३९।।

तमसाऽऽपगायाः = तमसा + अपगथा = अकः सवर्णे दीर्घः।

गंगाम्बु = गंगा + अम्बु = अकः सवर्णे दीर्घः।

ईयु .... पयोभिः।।४०।।

च्युताऽशनायाः = च्युत + अशनायाः = अकः सवर्णे दीर्घः।

व्यास्यन्नुदन्याम् = व्यास्यन् + उदन्याम् = ङमो ह्रस्वादचिङमुण् नित्यम्[229]।

पयोभिः = पयः + भिः = हशि च[230], आद्गुणः।

वाचंयमान .... सशिष्यम् ।।४१।।

स्थण्डिलशायिनश्च = स्थण्डिलशायिन + च = विसर्जनीयस्य सः[231], स्तोः श्चुना श्चुः।

आतिथ्यमेभ्यः .... द्राधिमवन्त्युदूहुः ।।४२।।

द्राघ्रिभबन्त्युदूहुः = द्राधिभवन्ति + उद्हुः इकोयणचि[232]।

आज्ञां .... वनिताश्च तस्मिन् ।।४३।।

तिलोत्तमाद्या = तिल + उत्तम + आद्या = आद्गुणः, अकः सवर्णे दीर्घः।

वनिताश्च = वनिताः + च = विसर्जनीयस्य सः, स्तोः श्चुना श्चुः[233]।

वस्त्राऽन्नपानं .... शेध्वम् ।।४४।।

वस्त्राऽन्नपानम् = वस्त्र + अन्नपानम् = अकः सवर्णे दीर्घः[234]।

कृत्वाऽवकाशे = कृत्वा + अवकाशे = अकः सवर्णे दीर्घः।

पिबताऽत्त = पिबत + अत = अकः सवर्णे दीर्घः।

ते भुक्तवन्तः .... समीयुः ।।४५।।

बासांस्युषित्वा = वासांसि + उषित्वा = इकोयणचि[235]।

वैखानसेभ्य .... चित्रकूटम् ।।४६।।

लिहाऽग्रम् = लिह + अग्रम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

आनंहिरेऽद्रिम् = आनंहिरे + अद्रिम = एङः पदान्तादति[236]।

दृष्ट्वा .... उज्जिहानः ।।४७।।

दृष्ट्वोर्णुवानान् = दृष्ट्वा + ऊर्णुबानान् = आद्गुणः[237]।

बलौघान् = बल + ओद्यान् = वृद्धिरेचि[238]।

शुक्लोत्तरा .... स्ववर्ग्यान् ।।४८।।

शुक्लोत्तर = शुक्ल + उत्तर = आद्गुणः।

उत्तरासंगभतः = उत्तर + असंगभृतः = अकः सवर्णे दीर्घः।

सम्लकाषम् .... रामवियोगशोकात् ।।४९।।

रामाऽन्तिकम् = राम + अन्तिकम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

चिरं .... अन्तिकेऽपाम् ।।५०।।

जलाद्राघव = जलात् + राघवः = झलां जशोऽन्ते[239]।

अन्तिकेऽपाम् = अन्तिके + अपाम् = एङः पदान्तादति[240]।

अरण्ययाने .... कनीयान् ।।५१।।

वहाऽमुम् = वह + अमुम् = अकः सवर्णे दीर्घः[241]।

कृती श्रुती .... पुत्रकाम्या।।५२।।

धीमांस्तवम् = धीमान् + त्वम् = नश्छव्यप्रशान्ः[242]।

चेद्ववचनम् = चेत् + वचनम् = झलां जशोऽन्ते[243]।

विद्यामानेऽपि = विद्यामाने + अपि = एङः पदान्तादति[244]।

अस्माकमुक्तं .... पृथ्वीम् ।।५३।।

जिह्वेष्यतिष्ठन् = जिह्वेषि + अतिष्ठन् = इकोयणचि[245]।

वृद्धौरसां .... धर्म्यम् ।।५४।।

भरतोऽपि = भरतः + अपि = अतोरोरप्लुतादप्लुते[246], आद् गुणः, एङः पदान्तादति।

वृद्धौरसाम् = वृद्ध + औरसाम् = वृद्धिरेचि[247]।

उर्जस्वलं .... शान्तमेतत्।।५५।।

चैतद् = च + एतद् = वृद्धिरेचि।

क्षितीन्द्रः = क्षिति + इन्द्रः = अकः सवर्णे दीर्घः।

इति निगदितवन्तं .... कारकयाऽस्मन्मतेन ।।५६।।

जनौघेः = जन + ओघः = वृद्धिरेचि।

कारयाऽस्मनमतेन = कारय + अस्मत् + मतेन = अकः सवर्णे दीर्घः, यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[248]।

चतुर्थ सर्ग

अटाटयमानः .... रक्षसा।।२।।

अटाट्यमानोऽरण्यानीम् = अटाट्यमानः + अरण्यानीम् = अतोरोरप्लुतादप्लुते[249], आद्गुणः, एङः पदान्तादति।

बुभुक्षुणोत्क्षिप्य = बुभुक्षुणा + उत्क्षिप्य = आद्गुणः[250]।

अवाक्शिरसम् .... निचख्नतुः।।३।।

कृतान्तेनाऽपि = कृत + अन्तेन + अपि = अकः सवर्णे दीर्घः[251]।

आंहिषातां .... शरणैषिणाम् ।।४।।

अध्यासितः = अधि + आसितः = इकोयणचि[252]।

पुरो रामस्य .... मुनिकेतनम्।।५।।

पुरो रामस्य = पुरः + रामस्य = हशि च, आद्गुणः।

प्रदिश्याऽऽरात् = प्रदिश्य + आरात् = अकः सवर्णे दीर्घः।

यूयं .... गतिम् ।।६।।

समैष्यथेत्यस्मिन्नासिष्महि = समैष्यथ + इति + अस्मिन् + आसिष्महि = आद्गुणः, इकोयणचि, ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्[253]।

तस्मिन् .... आश्रमान् ।।७।।

भ्रमन्ननिशम् = भ्रमन् + अनिशम् = ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्–नित्यम्।

वनेषु .... विचक्रमे ।।८।।

शय्योत्थायम् = शय्या + उत्थायम् = आद्गुणः।

विध्यन्नातिथेयः = विध्यन् + आतिथेयः = ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्।

ऋग्यजुषम् .... होमवान् ।।९।।

यांश्च = यान् + च = नश्छव्यप्रशान्[254], स्तोःश्चुना श्चुः[255]।

वसानः .... तनुत्रवान् ।।१०।।

वासनस्तन्त्रकनिभे = वासनः + तत्रिकनिभे = विसर्जनीयस्य सः[256]।

विप्रांस्तनुत्रवान् = विप्रान् + तनुत्रवान् = नश्छव्यप्रशान्[257]।

हित्वाऽऽशित .... निर्भयः।।११।।

हित्वाऽशित = हित्वा + आशित = अंकः सवर्णे दीर्घः[258]।

येषवाशितम्भवम् = येषु + आशितम्भवम् = इकोयणचि[259]

वनेष्वानभ्र = वनेषु + आनभ्र = इकोयणचि।

व्रातीनत्यालदीप्राऽस्त्रः .... नैकटिकाश्रमान् ।।१२।।

नैकटिकाश्रमात् = नैकटिक + आश्रमात् = अकः सवर्णे दीर्घः।

परेद्यव्यद्य .... अगात् ।।१३।।

परेद्यव्यद्य = परेद्यवि + अय = इकोयणचि।

अनयेद्युश्चापि = अन्येद्युः + च + अपि = विसर्जनीयस्य सः, स्तोःश्चुना श्चुः[260], अकः सवर्णे दीर्घः।

मुन्नीनद्राणाम् = मुनि + इन्द्राणाम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

ददृशे .... सौमित्रयेऽसकौ।।१५।।

राक्षस्याऽभीकयाऽथ = राक्षसया + अभीकया + अथ = अकः सवर्णे दीर्घः।

भार्योढम् = भार्या + ऊढम् = आद्गुणः[261]।

सौमित्रयेऽसकौ = सौमित्रये + असकौ = एङः पदान्तादति[262]।

दधाना .... पक्षतौ ।।१६।।

चन्द्रलेखेव = चन्द्रलेखा + इव = आद्गुणः।

त्वचेनाऽतिसर्वेण = त्वचेन + अतिसर्वेण = अकः सवर्णे दीर्घः[263]।

सुपाद् .... धनेन सा ।।१७।।

द्विरदनासोरू = द्विरदनास + ऊरू = आद्गुणः[264]।

मृदुपाणितलांगुलिः = मृदुपाणितला + अङ्गुलि अकः सवर्णे दीर्घः।

उन्नसं .... सुहसानना ।।१८।।

शुद्धदल्लोलकुण्डलम् = शुद्धवत् + लोलकुण्डलम् = 'तोर्लि[265]।

प्राप्य .... प्रियंवदा ।।१९।।

चञ्चूर्यमाणाऽसौ = चञ्चूर्यमाणा + असौ = अकंः सवर्णे दीर्घः।

रघूत्तमम् = रघु + उत्तमम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

सौमित्रे! .... पुरूषायुषम् ।।२०।।

पुरुषायुषम् = पुरुष + आयुषम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

मानुषानभिलष्यन्ती .... कथमञ्जसि।।२२।।

अप्सरायमाणेह = अप्सरायमाणा + इह = आद् गुणः[266]।

उग्रम्पश्याऽऽकुलेऽरण्ये .... कथं न वा।।२३।।

पश्याऽऽकुलेऽरुण्ये = पश्य + आकुले + अरण्ये = अकः सवर्णे दीर्घः, एङः पदान्तादति[267]।

राघवं .... औपकर्णिकलोचन।।२४।।

इच्छानुरहसम् = इच्छा + अनुरहसम् = अकः सवर्ण दीर्घः।

वपुश्चान्दनिकं .... यस्यौपजानुकौ ।।२५।।

वपुश्चान्दनिकम् = वपुः चान्दनिकम् = विसर्जनीयस्य सः[268], स्तोः श्चुना श्चुः[269]।

यस्यौपजानुकौ = यस्य + औपजानुकौ = वृद्धिरेचि[270]।

बद्धा .... धत्तेऽन्यदुर्वहम् ।।२६।।

दुर्बलरक्षाऽर्थमसिः = दुर्बलरक्षा + अर्थमसिः = अंकः सवर्णे दीर्घः[271]।

येनौपनीविकः = येन + औपनीविकः = वृद्धिरचि[272]।

यश्चापमाश्यनप्रख्यम् = यः + च + आश्मनप्रख्यम् = विसर्जनीयसय सः[273], स्तोः श्चुना श्चुः अकः सवर्णे दीर्घः।

धत्तेऽनय = धत्ते + अन्य = एङःपदान्तादति[274]।

ततो वावृत्यमानाऽसौ .... वचः।।२८।।

न्यविक्षत = नि + अविक्षत = इकोयणचि[275]।

रामेति = राम + इति = आद्गुणः[276]।

सादरम् = स + आदरम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

अस्त्रीकः .... मा मुचः।।२९।।

अस्त्रीकोऽसावहम् = अस्त्रीकः + असौ + अहम् = अतोरोरप्लुतादप्लुते[277], आद्गुणः, एङः पदान्तादति एचोऽयवायावः।

इत्यब्रवीत् = इति + अब्रवीत् = इकोयणचि।

रामस्तमेव = रामः + तमेव = विसर्जनीयस्य सः।

लक्ष्मणं सा .... पुनः ।।३०।।

महोक्षम् = महा + उक्षम् = आद् गुणः।

इवागमत् = इव + अगमत् = अकः सवर्णे दीर्घः।

तस्याः .... मुखम् ।।३१।।

चकाराऽपनसम् = चकार + अपनसम् = अकः सवर्णे दीर्घः[278]।

अहं शर्पणखा .... साऽब्रवीत् ।।३२।।

नाडज्ञायिषि न + अज्ञायिशि = अकः सवर्णे दीर्घः[279]।

साऽब्रवीत् = स + अब्रवीत् = अकः सवर्णे दीर्घः।

दण्डोऽयम् = दण्डः + अयम् = अतोरोरप्लुतादप्लुते[280], आद्गुणः, एङः पदान्तादति।

मय्यपातीति = मयि + अपाति + इति = इकोयणचि[281], अकः सवर्णे दीर्घः।

पर्यशाप्सीत् .... मुहुः।।३३।।

पिस्फवञ्च = अपिस्फवत् + च = स्तोः श्चुना श्चुः[282]।

खरदूषणयोः .... दण्डकारण्यवासिनम् ।।३४।।

दण्डकारण्य = दण्डक + आरण्य = अकः सवर्णे दीर्घः।

असंस्कृत्रिम .... माम् ।।३७।।

असंस्कृत्रिमसंव्यानावनुप्त्रिमफलाशिनौ = असंस्कृत्रिमसंवयानौ + अनुप्त्रिमफल + अशिनौ = एचोऽयवायावः[283], अकः सवर्णे दीर्घः।

तथाऽपि = तथा + अपि = अकः सवर्णे दीर्घः।

श्वः श्रेयसम् .... मा रूदः ।।३८।।

प्राणिवस्तव = प्राणिवः + तव = विसर्जनीयस्य सः[284]

मानार्थम् मान + अर्थम् = अकः सवर्णे दीर्घः।

व्रजाऽऽश्वसिहि = वज्र + आश्वसिहि = अकः सवर्णे दीर्घः।

जक्षिमः .... क्षमामहे ।।३९।।

जक्षिमोऽनपरछेऽपि = जक्षिमः + अनपराधे + अपि = अतोरोरप्लुतादप्लुते, आद्गुणः[285], एङः पदान्तादति[286]।

तौ चतुदर्श .... अन्वितौ।।४०।।

निर्ययतुस्ततः = निर्ययतुः + ततः = विसर्जनीयस्य सः[287]।

प्रासिकाऽन्वितौ = प्रासिका + अन्वितौ = अकः सवर्णे दीर्घः[288]।

अश .... मृगधे ।।४१।।

त्रिमूर्धाश्चाहताम् = त्रिमूर्धाः + च + आहताम् = विसर्जनीयस्य सः, स्तोः श्चुना श्चुः[289], अकः सवर्णे दीर्घः।

निमग्नोद्विग्न = निमग्न + उद्विग्न = आद्‌गुणः[290]।

दीनैश्च = दीनैः + च = विसर्जनीयस्य सः, स्तोःश्चुना श्चुः।

मृगयुमिव .... पतत्त्रिराजम् ।।४४।।

मृगोऽथ = मृगः + अथ = अतोरोरप्लुतादप्लुते, आद् गुणः, एङः पदान्तादति[291]।

मरावुदन्यन् = मरौ + उदन्यन् = एचोऽयवायावः[292]।

इवोग्रमुखम् = इव + उग्रमुखम् = आद् गुणः[293]।

शितविशिखनिकृत .... लिङ्गतुल्य।।४५।।

क्षितिभृदिव = क्षितिभृत् + इव = झलां जशोऽन्ते[294]।

पंचम सर्ग

तौ .... रणे ।।२।।

आयुधच्छायम् = आयुध + छाया = 'छेच[295], स्तोः श्चुना श्चुः।

अथ .... यमसाचच्चक्रतुद्विषौ।।३।।

तीक्ष्णायसैः = तीक्ष्ण + आयसैः= अकः सवर्णे दीर्घः[296]।

रघूत्तमौ = रघु + उत्तमौ = अकः सवर्णे दीर्घः।

सम्प्राप्य .... रावणाऽन्तिके ।।५।।

रावणाऽन्किे = रावण + अन्तिके = अकः सवर्णे दीर्घः।

हतबन्धुः .... पतिम् ।।४।।

जगामाऽसौ = जगाम + असौ = अकः सवर्णे दीर्घः।

दण्डकान् .... भूमिवर्धनौ ।।६।।

संख्येऽकृषाताम् = संख्ये + अकृषाताम् = एङः पदान्तादति[297]।

वृतस्त्वं .... उन्मनाः ।।१०।।

नात्यन्तीनत्वम् = न + अत्यन्तीनत्वम् = अकः सवर्णे दीर्घः[298]।

अध्वरेष्वग्नि = अध्वरेषु + अग्नि = इकोयणचि[299]।

महेन्द्रियम् = महा + इन्द्रियम् = आद्‌गुणः[300]।

च्यवनोऽधुना = च्यवनः + अधुना = अतोरोरप्लुतादप्लुते, आद्‌गुणः, एङः पदान्तादति[301]।

आमिक्षीयं .... राक्षसाः ।।१२।।

तथौषधम् = तथा + औषधम् = वृद्धिरेचि[302]।

नाऽपयुपघ्नन्ति = न + अपि + उपध्नन्ति। = अकः सवर्णे दीर्घः, इकोयणचि।

युवजानि .... शिलीमुखेः ।।१३।।

रामो मो यज्ञद्रुहो याद्रुहो = राम + यज्ञद्रुहो = हशि च[303], आद्गुणः।

मांसानि .... दिशः ।।१४।।

मांसान्योष्ठाऽबलोप्यानि = मांसानि + ओष्ठ + अवलोप्यानि = इकोयणचि[304], अकः सवर्णे दीर्घः।

बिभ्यत्यश्नुवते = बिभ्यति + अश्नुवते = इकोयणचि।

सहायवन्त .... मा श्वसी ।।१६।।

निपुणाश्च = निपुणाः + च = विसर्जनीयस्य[305] सः स्तोः श्चुना श्चुः।

लोलां ताम् = लोलाम् + ताम् = मोऽनुस्वार[306]

कुलटेव = कुलटा + इव = आद्गुणः।

अन्तिकेऽपि = अन्तिके + अपि = एङः पदान्तादति

पत्युश्छलेनाऽन्यम् = पत्युः + छलेन + अन्यम् = विसर्जनीयस्य सः[307], स्तोः श्चुः श्चतुः, अकः सवर्णे दीर्घः।

नाऽऽस्यं .... विहितेन्द्रियः ।।१९।।

नाऽऽस्यम् = न + अस्यम् = अकः सवर्णे दीर्घः[308]।

यस्तस्याः = यः + तस्याः = विसर्जनीयस्य सः[309]।

दन्तच्छदम् = दन्त + छदम् = 'छे च[310] स्तोःश्चुना श्चु।

चोक्तानि = च + उक्तानि = आद्गुणः[311]।

मिथ्याऽऽसौ = मिथ्या + असौ = अकः सवर्णे दीर्घः।

विहितेन्द्रियः = विहित + इन्द्रियः = आद्गुणः।

सारः .... निमज्जुथम् ।।२०।।

सारोऽसाविन्द्रियाऽर्थानाम् = सारः + असौ + इन्द्रिय + अर्थानाम् = अतो रोरप्लुतादप्लुते, एचोऽयवायावः[312], अकः सवर्णे दीर्घः।

तस्याऽसौ = तस्या + असौ = अक: सवर्णे दीर्घ:।

कान्ताऽन्तरै: = कान्ता + अन्तरै: = अक: सवर्णे दीर्घ:।

मन्येऽहम् = मन्ये + अहम् = एङ:, पदान्तादति[313]।

धिङ्निमज्जथुम् = धिक् + निमज्ञथुम् = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[314]।

न तं पश्यामि .... सुकृती भव।।२१।।

भवेन्नोदेजया = भवेत् + न + उदेजया = यरोअनुनासिकेऽनुनासिको वा:, आद्गुण:।

यस्याऽसौ = यस्या + असौ = अक: सवर्णे दीर्घ:।

त्रैलोक्येनाऽपि = त्रैलोक्येन + अपि = अक: सवर्णे दीर्घ:।

नैवेन्द्राणि .... समा ।।२२।।

नैवेन्द्राणि = न + एव + इन्द्राणि = 'वृद्धिरेचि[315], आद्गुण:।

नाऽग्नायी = न + अग्नायी = अक: सवर्णे दीर्घ:[316]।

प्रत्यूचे .... रावणो ह्यहम् ।।२३।।

राक्षसेन्द्रस्ताम् = राक्षस + इन्द्र: + ताम् = आद् गुण:, विसर्जनीयस्य स:[317]।

ह्यहम् = हि + अहम् = 'इकोयणचि[318]।

मामुपास्त .... अनादरेक्षित:।।२४।।

आज्ञालाभोन्मुख: = आज्ञालाभ + उन्मुख: = आद्गुण:[319]।

काक्षेणाऽनादर = काक्षेण + अनादर: अक: सवर्णे दीर्घ:।

विरूग्णोदग्रधाराऽग्र: .... बली ।।२५।।

विरुग्णोदग्रधाराऽग्र:= विरुग्ण + उदग्रधार + अग्र: आद्गुण:, अक: सवर्णे दीर्घ:।

शतधाऽऽत्मानम् = शतधा + आत्मानम् = अक: सवर्णे दीर्घ:।

कृत्या .... तृणवदत्यजम्।।२६।।

द्रुमाऽऽलानम् = द्रुम + आलानम् = अक: सवर्णे दीर्घ:।

बन्धनेऽनुपयोगित्वान्न = बन्धने + अनुपयोगित्वात् + न = एङ: पदान्तादति, यरोऽनुनासिकेऽनुनासिके वा[320]।

आहोपुरूषिकां .... सदा।।२७।।

ध्वस्ताऽन्धकारेऽपि = ध्वस्त + अन्धकारे + अपि = अकः सवर्णे दीर्घः, एङः पदान्तादति।

पूर्णेन्दोः = पूर्ण + इन्दोः = आद्गुणः[321]।

हृतरत्नः .... गोत्रभित्।।२८।।

रत्नश्च्युतोद्योगः = रत्नः + च्युत + उद्योगः = विसर्जनीयसय सः, स्तोः श्चुना श्चुः[322], आद्गुणः

अतुल्यमहसा .... तद्विनिग्रहे ।।२९।।

त्रपाकरस्तथाऽप्येषः = त्रपाकरः + तथा + अपि + एषः – विसर्जनीयस्य सः, अकः सवर्णेदीर्घः, इकोयणचि[323]।

उपत्य .... चक्रमे।।३०।।

खं दशग्रीवो = खम् + दशग्रीवः = 'मोऽनुस्वारः[324]।

शिताऽस्रभूत् = शित + अस्रभूतः = अकः सवर्णे दीर्घः[325]।

संपत्य .... दशाननः।।३१।।

सनीडेऽसौ = सनीडे + असौ = एङः, पदान्तादति[326]।

त्रस्नुनाऽथ = त्रस्नुना + अथ = अकः सवर्णे दीर्घः।

श्रुताऽर्थेन = श्रुत + अर्थेन = अकः सवर्णे दीर्घः।

तेनाऽगादि = तेन + अगादि = अकः सवर्णे दीर्घः।

राक्षसेश्वरः = राक्षस + ईश्वर = आद्गुणः[327]।

योरणः = यः + रणः = हशि च = आद्गुणः।

यमाऽऽस्यदृश्वरी .... सिंहनर्दिना।।३४।।

यमाऽऽस्य = यम + अस्य = अकः सवर्णे दीर्घः

रणाच्चाहम् = रणात् + च + अहम् = 'स्तोः श्चुना श्चुः[328], = अकः सवर्णे दीर्घः।

न त्वं .... चाऽन्वभविष्यहम् ।।३५।।

नाऽन्वभावि = न + अनु + अभावि = अकः सवर्णे दीर्घः, इकोयणचि[329]

चाऽन्वभविष्यहम् = च + अनु + अभविषि + अहम् = अकः सवर्णे दीर्घः, इकोयणचि।

अध्यङ् .... धनुः।।३६।।

मद्विधा = मत् + विधा = झलां जशोऽन्ते[330]।

संवित्तः .... मखेषु सः ।।३७।।

तच्छक्तिम् = तत् + शक्तिम् = 'शश्छोऽटि[331], स्तोः श्चुना श्चुः।

यज्वानश्च = यज्वानः + च = विसर्जनीयस्य सः, स्तोः श्चुना श्चुः[332]।

सुखजातः .... बलिविग्रहम् ।।३८।।

माराऽऽरब्धाः = मार + आरब्धाः = अकः सवर्णे दीर्घः[333]।

तं .... किं ततः।।३९।।

प्रत्यभाषत = प्रति + अभाषत = इकोयणचि[334]।

अद्यानि .... क्षुद्रमानसम् ।।४१।।

तच्छलाध्यम् = तत् + श्लाध्यम् = शश्छोऽटि, स्तौः श्चुना रचुः।

यद् गेहे .... न तत् ।।४१।।

रामो भवन्तम् = रामः + भवन्तम् = हशिच[335], आद्गुणः।

क्षत्रियकान्तिके = क्षात्रियक + अन्तिके = अकः सवर्णे दीर्घः[336]।

चिरकालोषितम् = चिरकाल + उषितम् = आद्गुणः[337]

वनतापसके .... खरदूषणौ ।।४३।।

साऽवज्ञौ = स + अवज्ञौ = अकः सवर्णे दीर्घः[338]।

त्वं तु .... न सदा ।।४४।।

गुणांश्चाऽपह्नुषेऽस्माकम् = गुणान् + च + अपहुषे + अस्माकम् = नश्छव्यप्रशान्[339], स्तोः श्चुना श्चुः, अकः सवर्णे दीर्घः, एङः पदान्तादति[340]।

शीर्षच्छेद्यमतोऽहं .... निजधृक्षुर्वनौकसौ।।४५।।

शीर्षच्छेद्यम् = शीर्ष + छेद्यम् = 'शितुक[341], स्तोः श्चुना श्चुः।

अतोऽहम् = अतः + अहम्, = 'अतोरोरप्लुतादप्लुते[342], आद्गुणः, एङः पदान्तादति।

तमुद्यतनिशाताऽसिं .... भवानि ते।।४६।।

प्रत्युवाच = प्रति + उवाच = इकोयणचि[343]।

अभ्यमित्र्यः = अभि + अमित्र्यः = इकोयणचि।

हरामि .... च सन्तनु ।।४७।।

यथेष्टम् = यधा + इष्टम् = आद्गुणः[344]।।

ततश्चित्रीयमाणोऽसौ .... लोभयन् ।।४८।।

ततश्चित्रीयमाणोऽसौ = ततः + चित्रीयमाणः + असौ = विसर्जनीयस्य सः[345], स्तोःश्चुना श्चुः, अतोरोरप्लुतादप्लुते[346], आद्गुणः, एङ् पदान्तादति।

तनाऽदुधूषयद्रामं .... मृगाऽजिनम् ।।४९।।

मृगाऽजिनम् = मृग + अजिनम् = अकः सवर्णे दीर्घः[347]।

विपुलोरस्कम् = विपुल + उरस्कम् = आद् गुणः।

योगक्षेमकरं .... गजविक्रमः।।५०।।

मृगस्याऽनुपदी = मृगस्य + अनुपदी = अकः सवर्ण दीर्घः।

स्थायं स्थायं .... विसिष्मिये।।५१।।

रामाश्चितवृत्तिम् = रामः + चितवृतिम् = विसर्जनीयस्य सः, स्तोः श्चुना श्चुः[348]।

श्रुत्वा .... गन्तुमैजिहत् ।।५३।।

कष्टाश्रितम् = कष्ट + आश्रितम् = अकः सवर्णे दीर्घः[349]।

एष .... राघवम् ।।५४।।

प्रावृषिजाऽम्भोदः = प्रावृषिज + अम्भोद = अकः सवर्णे दीर्घः।

मृषोद्यं .... शपन्वशी ।।६०।।

रघूत्तमः = रघु + उत्तमः= अकः सवर्णे दीर्घः[350]।

निरगाच्छत्रूहस्तम् = निरगात् + शत्रुहस्तम्ः = 'शश्छोऽटि[351], स्तोः श्चुना श्चुः।

यास्यसीति = यास्यसि + इति = अकः सवर्णे दीर्घः।

गते .... मृदलाबुनः।।६१।।

जञ्जपूकोऽक्षमालावान् = जञ्जपूकः अक्षमालावान् = अतोरारप्लुतादप्लुते, आद्गुणः, एङ्पदान्तादति[352]।

तस्मिञ्जलशुचिः = तस्मिन् + जलाशुचिः = अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

अधीयन् .... विलोकयन्।।६३।।

अधीयन्नात्मविद्विद्याम् = अधीयन् + आत्मवित् + विद्याम् = ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् ‘झलाऽशोऽन्ते[353]।

का त्वमेकाकिनी भीरू! .... न वा ।।६६।।

क्षुध्यन्तोऽप्यघसन् = क्षुयन्त: + अपि + अघसन् ‘अतोरोरप्लुतादप्लुते[354] आद्गुण:, एङ: पदान्तादति, इकोयणचि।

व्यालास्त्वाम् = व्याला: + त्वाम् = विसर्जनीयस्य स:[355]।

हृदयङ्गममूर्ति .... हेतुना।।६७।।

मूर्तिस्त्वम् = मूर्ति: + त्वम् = विसर्जनीयस्य स:।

अप्येतद्वदाऽभ्यै: = अपि + एतत् + वद + अभ्यै: = इकोयणचि, झलां जशोऽन्ते[356], अक: सवर्णे दीर्घ:।

सुकृतं .... सुरतेषु कः ।।६८।।

रहस्युपतिष्ठसे = रहसि + उपतिष्ठसे = इकोयणचि[357]

पुण्यकृच्चाटुकारस्ते = पुण्यकृत् + चाटुकार: + ते = स्तो: श्चुना श्चु:[358], विसर्जनीयस्य स:।

परिपर्युदधे .... सुजीवितम् ।।६९।।

परिपर्युदधे: = परिपरि + उद धे: = इकोयणचि।

द्युलोकाच्च = द्युलोकात् + च = स्तो: श्चुना श्चु:।

अस्मास्वधि = अस्मासु + अधि = इकोयणचि।

आपीतमधुका .... मे मति:।।७०।।

सुदिवेवाऽरविन्दिनी = सुदिवा + इव + अरविन्दिनी = आद्गुण:[359], अक: सवर्णे दीर्घ:

नाऽपुंस्काऽसीति = न + पुंस्का + असि + इति = अक: सवर्णे दीर्घ:, अक: सवर्णे दीर्घ:।

मिथ्यैव श्री .... श्रियं श्रियः ।।७१।।

मिथ्यैव = मिथ्या + एव – वृद्धिरेचि[360]।

साक्षात्कृत्याऽभिमन्येऽहम् = साक्षात्कृत्य + अभिमन्ये + अहम् = अक: सवर्णे दीर्घ:, एङ: पदान्तादति[361]।

वल्गूयन्ती .... स्थाणुसमोऽपि ते।।७३।।

मन्तूयतीह = मन्तूयति + इह = अकः सवर्णे दीर्घः।

नाऽभिमनायेत = न + अभिमनायेत = अकः सवर्णे दीर्घः।

समोऽपि = समः + अपि = अतोरोरप्लुतादप्लुते[362] ,आद्गुणः, एङः पदान्तादति।

दुःखायते .... प्रतीपायसेऽन्तिके।।७४।।

एवैकः = एव + एकः = वृद्धिरेचि[363]।

यस्योत्सुकायमाना = यस्य + उत्सुकायमाना = आद् गुणः[364]।

प्रतीपायसेऽन्तिके = प्रतीपायसे + अन्तिके = एङः पदान्तादति[365]।

ओजायमाना .... वचः ।।७६।।

तस्याऽर्ध्यम् = तस्य + अर्ध्यम्= अकः सवर्णे दीर्घः[366]।

जनकाऽऽत्मजा = जनक + आत्मजा = अकः सवर्णे दीर्घः।

साऽऽदरा = स + आदरा = अकः सवर्णे दीर्घः।

महाकुलीन .... तपस्विनाम् ।।७७।।

क्षेमकारस्तपस्विनाम् = क्षेमकारः + तपस्विनाम् = विसर्जनीयस्य सः[367]।

अध्वरे .... वनम्।

नियोगाद्राजत्वं = नियोगात् + राजत्वम् = झलांग जशोऽन्ते[368]।

योऽभ्यागमत् = यः + अभ्यागमत् = अतो रोरप्लुतादप्लुत[369], आदगुणः, एङ् पदान्तादति।

दीव्यमानं .... नाऽवगच्छसि।।८१।।

नाऽबगच्छसि = न + अवगच्छसि = अकः सवर्णे दीर्घः।

भ्रातरि .... वनम् ।।८२।।

तस्याऽनुजो = तस्य + अनुज = अकः सवर्णे दीर्घः।

अथ .... दशाननः।।८३।।

अथाऽऽयस्यन्कषायाऽक्षः = अथ + आयस्यन्कषाया + अक्षः = अकः सवर्णे दीर्घ दीर्घ

शिताऽन्तराऽऽकूत = शिता + अन्तरा + आकूत = अकः सवर्णे दीर्घः।

राक्षसान् ....स्मयः ।।८५।।

यद्यसौ = यदि + असौ = इकोयणचि[370]

तवैतावति = तव + एतावति = वृद्धिरेचि[371]

मत्पराक्रम .... हरिः ।।८६।।

ममैव = मम + एव = वृद्धिरेचि[372]।

परिच्छद् = परि + छद = 'छे च' , स्तोः श्चुना श्चतुः[373]

निर्लङ्को .... कारणम्? ।।८७।।

अध्यास्तेऽतः = अध्यास्ते + अन्तः = एङः पदान्तादति[374]

तन्नाऽवैति = तत् + न + अवैति = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[375], अकः सवर्णे दीर्घः।

भिन्ननौक .... निरुद्यतिः।।८८।।

मुखेनाऽऽस्ते = मुखेन + अस्ति = अकः सवर्णे दीर्घः[376]।

समुद्रोपत्यका .... मैथिलि ।।८९।।

समुद्रोपत्यका = समुद्र + उपत्यका = आद्गुणः[377]

पर्वताऽधित्यका : पर्वत + अधित्यका = अकः सवर्णे दीर्घः।

लंकेति = लंका + इति = आद्गुणः।

आवासे .... मया सह।।९०।।

गन्धैस्त्वम् = गन्धैः + तवम् = विसर्जनीयस्य सः[378]

अर्पितोरु = अर्पित + ऊरु = आद्गुणः।

सगच्छ .... तमकिञ्चनम् ।।९१।।

अकिञ्चनम् = अकिं + चनम् = अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः[379]।

त्रस्यन्तीं .... मृगपक्षिणः ।।९५।।

रात्रिञ्चराऽऽलयम् = रात्रिं + चर + आलयम् = अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः[380], अकः सवर्णे दीर्घः।

उच्चै .... वदन् ।।९६।।

पक्षीन्द्रः = पक्षि + इन्द्रः = अकः सवर्णे दीर्घः[381]।

अहमन्तकरो .... कर्मकरोपमः ।।९९।।

ध्वान्तस्येव = ध्वान्तस्य + इव = आद् गुणः[382]।

सतामरूष्करं .... पपात खम्।।१००।।

कलहकारोऽसौ = कलहकारः + असौ = अतोरोरप्लुतादप्लुते, आद्गुणः, एङः पदान्तादति[383]।

न बिभाय .... रणान्निववृते न च ।।१०२।।

विध्यमानोऽपि = विद्यमानः + अपि = अतो रोरप्लुतादप्लुते[384], आद् गुणः।

रणान्निबवृत्ते = रणात् + निववृते = यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा[385]।

पिशाचमुखधौरेयं .... ध्वजशालीनम् ।।१०३।।

स च्छत्र = सत् + छत्र = स्तोः श्चुना श्चुः[386]।

असीतौ .... खगः ।।१०५।।

भूयस्तम् = भूयः + तम् = विसर्जनीयस्य सः[387]।

प्रलुठितभवनौ .... रामकान्ताम् ।।१०८।।

खेचरोत्तमम् = खेचर + उत्तमम् = आद् गुणः[388]।

नोदकष्ठिष्यतः .... वसेत् ।।७२।।

नोदकष्ठिष्यताऽत्यर्थं = न + उदकष्ठिष्यत + अति + अर्थम् = आद्गुणः, अकः सवर्णे दीर्घः, इकोयणचि।

खेलायन्ननिशम् = खेलायन् + अनिशम् = ङमो ह्रस्वादचिङ्मुण् नित्यम्[389] नाऽपि = न + अपि = अकः वर्णे दीर्घः[390]।

संदर्भ सूची

1. अष्टाध्यी भैमीव्याख्या भाग–I, सूत्र संख्या–8/4/44
2. वही 6/1/97
3. वही 1/1/74
4. वही 8/2/66
5. वही 8/3/15
6. वही 6/1/71
7. वही 8/4/39/
8. वही 6/1/109
9. वही 6/1/84
10. वही 6/1/105
11. वही 8/3/7
12. वही 8/3/34
13. वही 8/4/39
14. वही 8/4/54
15. वही 8/2/39
16. वही /8/3/7
17. वही 8/3/34
18. वही 8/4/39
19. वही 8/2/39
20. वही 6/1/97
21. वही 6/1/97
22. वही 6/1/97
23. वही 8/3/24
24. वही 6/1/97
25. वही 8/3/34
26. वही 8/2/66
27. वही 8/3/15
28. वही 6/1/84

29. वही 8/3/34

30. वही 8/3/15

31. वही 6/1/84

32. वही 6/1/97

33. वही 8/2/39

34. वही 6/1/84

35. वही 8/2/39

36. वही 8/3/15

37. वही 6/1/85

38. वही 6/1/97

39. वही 6/1/84

40. वही 8/2/66

41. वही 6/1/97

42. वही 6/1/105

43. वही 6/1/109

44. वही 6/1/105

45. वही 6/1/97

46. वही 8/3/15

47. वही 8/2/66

48. वही 6/1/97

49. वही 8/3/34

50. वही 6/1/97

51. वही 8/2/39

52. वही 1/1/74

53. वही 8/3/15

54. वही 8/3/34

55. वही 6/1/97

56. वही 6/1/105

57. वही 6/1/97

58. वही 8/3/15

59. वही 6/1/109

60. वही 8/3/7

61. वही 1/1/74

62. वही 6/1/105

63. वही 6/1/105

64. वही 6/1/97

65. वही 8/3/15

66. वही 6/1/97

67. वही 8/3/15

68. वही 8/4/44

69. वही 8/4/39

70. वही 1/1/74

71. वही 8/4/62

72. वही 8/3/34

73. वही 8/3/15

74. वही 8/4/39

75. वही 8/3/34

76. वही 8/2/39

77. वही 6/1/97

78. वही 8/3/15

79. वही 6/1/97

80. वही 1/1/74

81. वही 6/1/97

82. वही 8/3/34

83. वही 6/1/105

84. वही 6/1/97

85. वही 6/1/109

86. वही 8/4/57

87. वही 8/3/15

88. वही 6/1/97

89. वही 8/3/34

90. वही 8/3/34

91. वही 8/3/15

92. वही 6/1/97

93. वही 8/4/62

94. वही 8/4/39

95. वही 8/3/15

96. वही 6/1/97

97. वही 8/3/34

98. वही 8/3/34

99. वही 6/1/84

100. वही 6/1/97

101. वही 8/4/39

102. वही 6/1/97

103. वही 6/1/97

104. वही 6/1/97

105. वही 6/1/84

106. वही 6/1/105

107. वही 8/3/32

108. वही 8/4/59

109. वही 6/1/97

110. वही 8/4/44

111. वही 6/1/84

112. वही 6/1/97

113. वही 6/1/84

114. वही 8/3/7

115. वही 1/1/74

116. वही 6/1/71

117. वही 1/1/74

118. वही 1/1/74

119. वही 8/3/34

120. वही 6/1/97

121. वही 8/2/66

122. वही 1/1/74

123. वही 8/3/7

124. वही 6/1/97

125. वही 6/1/84

126. वही 8/2/39

127. वही 8/4/44

128. वही 6/1/105

129. वही 8/4/44

130. वही 8/3/34

131. वही 1/1/74

132. वही 6/1/97

133. वही 6/3/15

134. वही 6/1/110

135. वही 8/4/44

136. वही 6/1/97

137. वही 6/1/84

138. वही 6/1/84

139. वही 8/3/15

140. वही 8/3/15

141. वही 6/1/110

142. वही 6/1/109

143. वही 8/3/34

144. वही 8/2/66

145. वही 8/4/39

146. वही 6/1/84

147. वही 6/1/105

148. वही 6/1/109

149. वही 8/4/59

150. वही 8/3/15

151. वही 6/1/85

152. वही 6/1/97

153. वही 6/1/84

154. वही 8/4/44

155. वही 8/4/39

156. वही 6/1/109

157. वही 6/1/105

158. वही 6/1/85

159. वही 6/1/97

160. वही 6/1/75

161. वही 8/3/34

162. वही 8/3/32

163. वही 6/1/109

164. वही 8/2/39

165. वही 8/4/44

166. वही 8/3/32

167. वही 6/1/84

168. वही 6/1/97

169. वही 8/2/39

170. वही 6/1/110

171. वही 6/1/109

172. वही 6/1/105

173. वही 8/4/39

174. वही 6/1/97

175. वही 1/1/74

176. वही 6/1/105

177. वही 8/4/44

178. वही 6/1/85

179. वही 6/1/109

180. वही 6/1/97

181. वही 8/4/39

182. वही 8/2/66

183. वही 6/1/84

184. वही 8/3/7

185. वही 6/1/97

186. वही 8/4/44

187. वही 1/1/74

188. वही 6/1/84

189. वही 6/1/109

190. वही 6/1/75

191. वही 8/4/39

192. वही 8/2/39

193. वही 6/1/105

194. वही 6/1/97

195. वही 1/1/74

196. वही 8/3/34

197. वही 6/1/110

198. वही 6/1/109

199. वही 6/1/84

200. वही 8/4/44

201. वही 6/1/85

202. वही 1/1/74

203. वही 8/4/59

204. वही 8/4/39

205. वही 6/1/97

206. वही 6/1/105

207. वही 6/1/97

208. वही 8/4/44

209. वही 6/1/85

210. वही 6/1/84

211. वही 6/1/109

212. वही 8/4/39

213. वही 8/4/34

214. वही 6/1/97

215. वही 1/1/74

216. वही 8/4/44

217. वही 6/1/109

218. वही 6/1/84

219. वही 6/1/97

220. वही 6/1/109

221. वही 8/3/7

222. वही 6/1/97

223. वही 8/4/54

224. वही 8/2/39

225. वही 6/1/109

226. वही 6/1/84

227. वही 6/1/97

228. वही 1/1/74

229. वही 8/3/32

230. वही 6/1/110

231. वही 8/3/34

232. वही 1/1/74
233. वही 8/4/39
234. वही 6/1/97
235. वही 1/1/74
236. वही 6/1/105
237. वही 6/1/84
238. वही 6/1/85
239. वही 8/2/39
240. वही 6/1/105
241. वही 6/1/97
242. वही 8/3/7
243. वही 8/2/39
244. वही 6/1/105
245. वही 1/1/74
246. वही 6/1/109
247. वही 6/1/85
248. वही 8/4/44
249. वही 6/1/109
250. वही 6/1/84
251. वही 6/1/97
252. वही 1/1/74
253. वही 8/3/32
254. वही 8/3/7
255. वही 8/4/39
256. वही 8/3/34
257. वही 8/3/7
258. वही 6/1/97
259. वही 1/1/74
260. वही 8/4/39

261. वही 6/1/84

262. वही 6/1/105

263. वही 6/1/97

264. वही 6/1/84

265. वही 8/4/59

266. वही 6/1/84

267. वही 6/1/105

268. वही 8/3/34

269. वही 8/4/39

270. वही 6/1/85

271. वही 6/1/97

272. वही 6/1/85

273. वही 8/3/34

274. वही 6/1/105

275. वही 1/1/74

276. वही 6/1/84

277. वही 6/1/109

278. वही 6/1/97

279. वही 6/1/97

280. वही 6/1/109

281. वही 1/1/74

282. वही 8/4/39

283. वही 6/1/75

284. वही 6/3/34

285. वही 6/1/84

286. वही 6/1/105

287. वही 8/3/34

288. वही 6/1/97

289. वही 8/4/39

290. वही 6/1/84

291. वही 6/1/105

292. वही 6/1/75

293. वही 6/1/84

294. वही 8/2/39

295. वही 6/1/71

296. वही 6/1/97

297. वही 6/1/105

298. वही 6/1/97

299. वही 1/1/74

300. वही 6/1/84

301. वही 6/1/105

302. वही 6/1/85

303. वही 6/1/110

304. वही 1/1/74

305. वही 8/3/34

306. वही 8/3/23

307. वही 8/3/34

308. वही 6/1/9

309. वही 8/3/34

310. वही 6/1/71

311. वही 6/1/84

312. वही 6/1/75

313. वही 6/1/105

314. वही 8/4/44

315. वही 6/1/85

316. वही 6/1/97

317. वही 8/3/34

318. वही 1/1/74

319. वही 6/1/84

320. वही 8/4/44

321. वही 6/1/84

322. वही 8/4/39

323. वही 1/1/74

324. वही 8/3/23

325. वही 6/1/97

326. वही 6/1/105

327. वही 6/1/84

328. वही 8/4/39

329. वही 1/1/74

330. वही 8/2/39

331. वही 8/4/62

332. वही 8/4/39

333. वही 6/1/97

334. वही 1/1/74

335. वही 6/1/110

336. वही 6/1/97

337. वही 6/1/84

338. वही 6/1/97

339. वही 8/3/7

340. वही 6/1/105

341. वही 8/3/31

342. वही 6/1/109

343. वही 1/1/74

344. वही 6/1/84

345. वही 8/3/34

346. वही 6/1/109

347. वही 6/1/97

348. वही 8/4/39

349. वही 6/1/97

350. वही 6/1/97

351. वही 8/4/62

352. वही 6/1/105

353. वही 8/4/57

354. वही 8/2/39

355. वही 6/1/109

356. वही 8/3/34

357. वही 8/2/39

358. वही 1/1/74

359. वही 8/4/39

360. वही 6/1/84

361. वही 6/1/85

362. वही 6/1/105

363. वही 6/1/109

364. वही 6/1/85

365. वही 6/1/84

366. वही 6/1/105

367. वही 6/1/97

368. वही 8/3/34

369. वही 6/1/109

370. वही 1/1/74

371. वही 6/1/85

372. वही 6/1/85

373. वही 8/4/39

374. वही 6/1/105

375. वही 8/4/44

376. वही 6/1/84

377. वही 8/3/34

378. वही 8/4/57

379. वही 8/4/57

380. वही 6/1/97

381. वही 6/1/84

382. वही 6/1/105

383. वही 6/1/109

384. वही 8/4/44

385. वही 8/4/39

386. वही 8/3/34

387. वही 8/1/84

388. वही 1/1/74

389. वही 8/3/32

390. वही 6/1/97